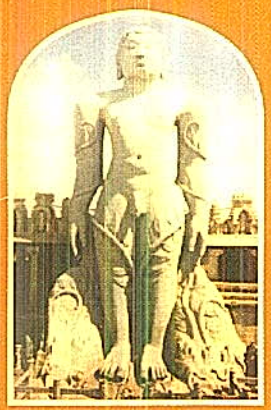

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : IV ISSUE : 10 MUMBAI, APRIL 2014 PAGES : 32 PRICE : ₹25

तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव

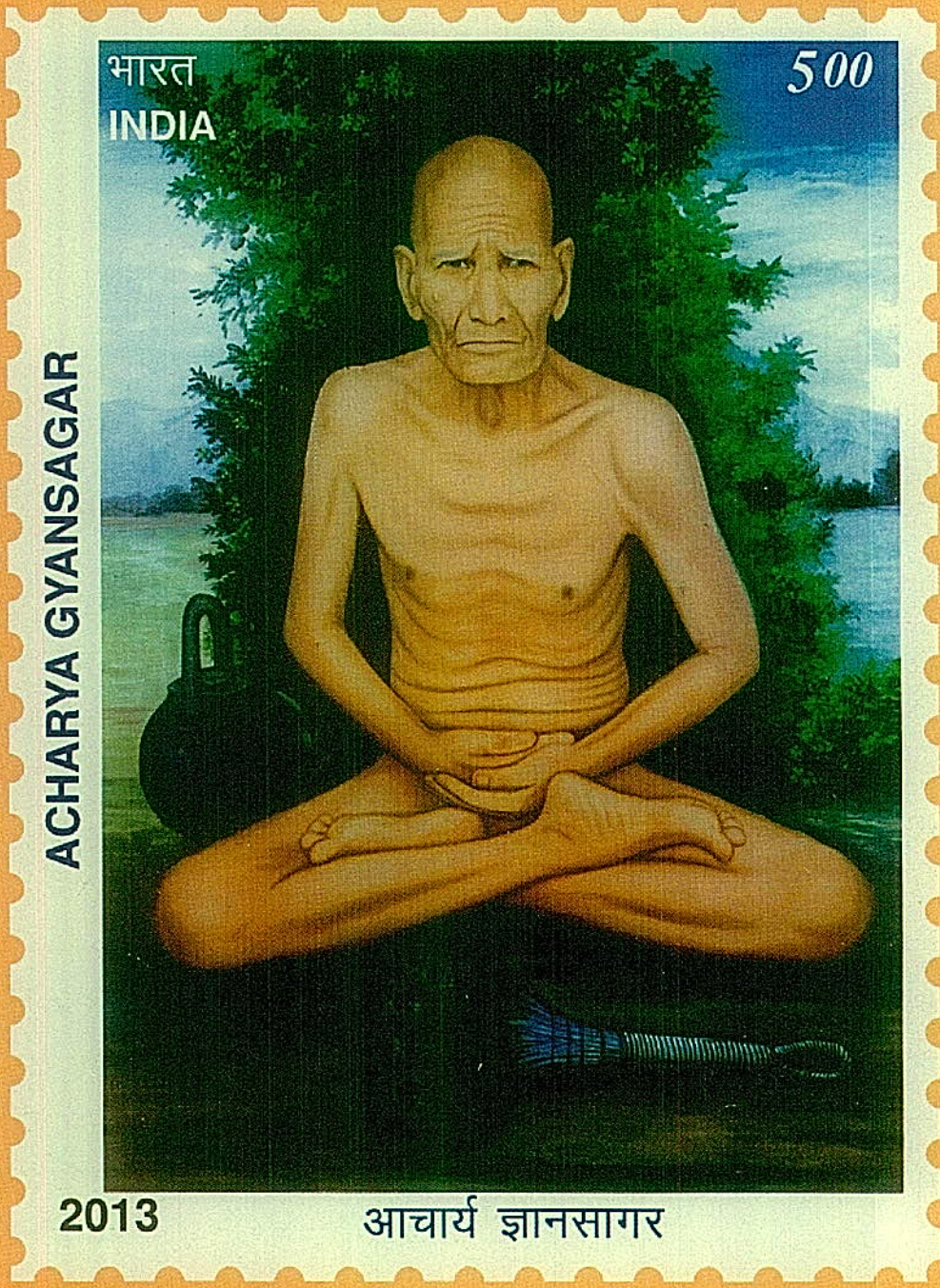


पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

**Corporate Office** : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 301100, 260101-10 Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

# अध्यक्ष की कलम से

प्रिय भाइयों एवं बहिनो,

'जय जिनेन्द्र' ...

'जय आदिनाथ' ...'जय महावीर'

हम सभी ने भगवान आदिनाथ स्वामी की जन्म जयंती बहुत धूम-धाम से मनाई। कुछ को भगवान की पालकी उठाने का सौभाग्य मिला तो किन्हीं को आरती-नृत्य का। युवाओं को थिरकते हुए बैंड बाजों का साथ मिला। शाकाहार एवं अहिंसा के समर्थन में गगनभेदी नारों से जुलूस में नया जोश-खरोश देखने को मिला। माताएं, बहिनें, बेटियां, केशरिया परिधानों में सज-धज कर देवांगनाओं का आभास करा रही थीं। भजन गाती मंडली के सुर आत्मविभोर कर रहे थे।

अपने-अपने घरों के सामने सुन्दर रंगोलियां प्रभु की मंगल अगवानी की सूचनाएँ दे रही थीं। पूरा नगर अहिंसामयी जैन धर्म के नारों से गूँज रहा था। अजैन बंधु भी जगह-जगह पर फल वितरण कर सामाजिक समरसता को आभास करा रहे थे।

मुझे भी इस बार, आदिनाथ जयंती पर श्री दखेड़ी जी (राजस्थान) अतिशय क्षेत्र पर उत्सव में शामिल होने का परम सौभाग्य मिला। वहां की प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री गुलाबचन्द जी, कार्याध्यक्ष श्री अजय बाकलीवाल (मानद् आर्कीटेक्ट) महामंत्री श्री महावीर प्रसाद जी, श्री महेन्द्र कुमार कांसल एवं श्री गोपाल जी, वकील साहब की कर्मठता, उत्साह एवं समर्पण के भावों से प्रेरणा पाकर मैं भगवान आदिनाथ जी की प्रतिमा का अभिषेक एवं शांतिधारा का पुण्य अर्जन कर सका। जीवन के इस पड़ाव पर आत्म संतोष के भावों को अंत:करण में संजो सका।

कितना जमीन-आसमान का फर्क महसूस किया। क्षेत्र के पुराने स्वरूप में और अब जीर्णोद्धार के बाद के विशाल-अतिशयकारी भव्य रूप में। कहां पहिले भगवान की प्रतिमा के दर्शन-पूजन के लिए झुक-झुककर, सुरंग जैसे रास्ते से घुटनों के बल प्रवेश करके अभिषेक कर पाया था और कहाँ आज (जीर्णोद्धार के बाद) सैकड़ों पूजनार्थियों की उपस्थिति में, आह्लादपूर्वक अभिषेक एवं शांतिधारा कर सका। आदिनाथ प्रभु नवीन कमलासन पर विराजित होकर, सुन्दर गर्भगृह एवं कलात्मक मंडप के खम्भों एवं संगमरमर के कलात्मक तोरणों से सज्जित - आप इतने सुन्दर-सलोने पहले कभी नहीं लगे मुझे। पूरे समय अपलक निहारता रहा।

कहां पहले पुजारी एवं माली के वेतनों के लाले पड़े होते थे। भूले-भटके यात्रियों के रुकने आदि की समुचित व्यवस्थाएँ नहीं हो पाती थीं और कहां आज नवनिर्माण के बाद हजारों तीर्थयात्रियों के ठहरने-भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्थाएँ मन को मोह रही हैं। जो एक बार आपके दर्शन कर लेता है वो बार-बार सपरिवार दर्शन हेतु आने का मन बना लेता है।

प्रभु मैं तो अज्ञानी हूँ लेकिन आप तो सर्वज्ञ-तीन लोक के नाथ हैं- मुझे दिशा-बोध दें कि मैं प्राचीनता-पुरातत्व का दामन पकड़कर ऐसे जीर्णोद्धार का विरोध करूँ या धर्मप्रभावना एवं नवनिर्माण का बिगुल बजाने का संकल्प ले लूँ।



महत्वपूर्ण जन्म नहीं, जीवन है।

धन्य हैं वे महाश्रमण जो ऐसे नवनिर्माण-जीर्णोद्धार की प्रेरणा देकर, समाज को नई आत्मिक ऊर्जा एवं पूज्यता के प्रसाद से भर रहे हैं। जिनालयों को सैकड़ों वर्षों के लिए अक्षुणत्व प्रदान कर रहे हैं। जिन धर्म के मर्म को सामूहिक पूजन-विधान के अवसर के संयोग दिला रहे हैं।

ऐसा ही नवनिर्माण-जीर्णोद्धार का स्वरूप देखने को मिला श्री कुंडलपुर जी सिद्धक्षेत्र (दमोह,म.प्र.) में, श्री संघीजी मंदिर सांगानेर में, श्री टोंक जी में, श्री चूलगिरि जी (जयपुर) में, श्री आंवाजी, श्री बिजौलिया जी में, श्री देवगढ़ जी में श्री हनुमानताल मंदिर जी (जबलपुर) में। जहां नवनिर्माण जीर्णोद्धार के पश्चात सैकड़ों-हजारों की संख्या में युवा-श्रद्धालु, भक्त, शराब-गुटका-जुआ आदि व्यसन त्यागकर, इन मंदिरों में अभिषेक (कलश)-पूजन की लाइन में लग गये हैं। प्रभु आपकी मूर्तियां तो वही की वही हैं लेकिन कलयुग में ऐसा चमत्कार कैसे? ..... मैं मूढ़ नहीं समझ सका कि पूज्यता आपकी प्रतिमाओं में है या ईंट-चूने की जर्जर होती दीवारों और गुम्बदों में। मुझे सद्बुद्धि दो ... दृष्टि दो... सही दिशा दो भगवन् ... मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ... सही-समझ की सामर्थ्य दो भगवन्।

रात्रि में ओजस्वी कवि श्री चन्द्रसेन जैन के संचालन में- तीर्थयात्रियों ने-प्रबुद्ध श्रोताओं ने आध्यात्मिक कविता पाठ का आनंद लिया, जिसमें देव एवं गुरु को समर्पित काव्य-पाठ की अनूठी बानगी देखी। कोटा में जिन मंदिरों के दर्शन कर नसिया जी-दादावाड़ी में महाकवि आचार्य विद्यासागर छात्रावास का निरीक्षण किया। दानवीर अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द सराफ, युवा उत्साही गुरुभक्त श्री हुकुम जैन 'काका', श्री राजमल जी (कोटा जैन समाज के अध्यक्ष), श्री गोपाल जी जैन, वकील साहब एवं पदाधिकारियों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात्- छात्रावास के भोजनालय में भोजन ग्रहण किया। छात्रों से मुलाकात कर उनको अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव का सार संदेश दिया।

कोटा जैन समाज ने छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास बनाकर - संचालन द्वारा नया आयाम रचा है जो देश के बड़े शहरों के लिए अनुकरणीय है। जिन मंदिरों के साथ- शिक्षा के ये मंदिर भी अब प्राथमिकता के सोपान बन रहे हैं। कोटा समाज को बहुत-बहुत बधाई।

जब तक यह पत्रिका आपके हाथों में पहुंचेगी- आप वर्तमान शासन-नायक भगवान महावीर स्वामी की जयंती अति उल्लास से मना चुके होंगे। श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर प्रभु की मनोहारी प्रतिमा हमेशा हमारे-आपके जीवन को आत्मीय प्रकाश का संदेश देती रहे ... जय महावीर।

सुना है कि पाषाण भी बोलते हैं,
कभी वज्र के भी अधर डोलते हैं।
जड़े मंदिरों के वधिर-देवता भी,
स्वयं द्वार की सांकले खोलते हैं।।

**अंत में एक बात और कहना चाहूँगा कि जैन समाज शिक्षित समाज है अतएव आगामी लोकसभा चुनाव में सभी अपनी-अपनी स्वेच्छानुसार अवश्य मतदान करें।**

आपका ही,

सुधीर जैन



जीवन का विकास बाह्य संसाधनों से नहीं, साधना से होता है।

# जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

## मुखपत्र

वर्ष 4 अंक 10 अप्रैल 2014



**परामर्श मण्डल**

डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर
डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

**संपादक**

उमानाथ आर. दुबे



**कार्यालय**

**भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी**

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com


'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

**मूल्य**

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक | : | 300 रुपये |
| त्रिवार्षिक | : | 800 रुपये |
| आजीवन (दस वर्ष) | : | 2500 रुपये |


**विज्ञापन आमंत्रित हैं.**

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।



| | |
|---|---|
| जैन धर्म के चतुर्थ तीर्थंकर भगवान श्री अभिनन्दननाथ | 6 |
| भगवान महावीर स्वामी के विचारों से विश्व शांति | 8 |
| वीर वर्धमान चरित का वैशिष्ट्य एवं जीवन सूत्र | 10 |
| हम सबके प्रभु | 14 |
| आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज : श्रेष्ठ शिष्य, श्रेष्ठ गुरु | 15 |
| लोकसभा चुनाव और जैन | 16 |
| संस्कार, संस्कृति और संन्यास | 17 |
| अंचलीय समितियों के अध्यक्षों के चुनाव | 18 |
| जैन अल्पसंख्यक हैं | 19 |
| चांदखेड़ी में भगवान आदिनाथ का जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न | 20 |
| आखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद मध्य प्रदेश | 24 |
| अतिशय क्षेत्र श्री भातकुली (अमरावती) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा | 26 |
| संस्कृति के संवाहक बने शिक्षक - आचार्य ज्ञानसागर | 27 |
| हमारे नये बने सदस्य | 28 |

आवरण चित्र निर्माता :
मुनि श्री श्रुतसागरजी महाराज



धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है ।

# जैन धर्म के चतुर्थ तीर्थंकर भगवान श्री अभिनन्दननाथ

- कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन, बुरहानपुर

जैन धर्म की वर्तमान तीर्थंकर परम्परा में चतुर्थ तीर्थंकर के रूप में श्री अभिनन्दननाथ भगवान का नाम बड़े आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। उनके द्वारा प्रतिपादित वस्तु स्वरूप का आधार वस्तु की सत्यता और वचनों की प्रामाणिकता रहा है। वे अपने नाम के अनुरूप ही अभिनन्दनीय और पूज्य हैं।

जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के दक्षिण तट पर मंगलावती नामक देश के रत्नसंचयनगर में जो महाबल नामक राजा था उसने भोगोपभोगो में अतृप्ति का अनुभव कर वैराग्य भाव उत्पन्न होने पर अपने सुपुत्र धनपाल को राज्यभार सौंप कर श्री विमलवाहन मुनिराज के पास संयम-जिनदीक्षा ग्रहण की और ग्यारह अंगों का पाठकर सोलहकारण भावनाओं का चिन्तवन करने के उपरान्त तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध किया। और आयु के अंत में सल्लेखनापूर्वक मरण कर विजय नामक अनुत्तर में तैंतीस सागर की आयु वाले अहमिन्द्र पद को प्राप्त किया।

अहमिन्द्र पद के अनुरूप अनुत्तर विमान में भोगोपभोग के सुख के उपरान्त जो अपना चित्त अरहन्त भगवान की भक्ति में लगाता था, ऐसा वह महाबल का जीव अहमिन्द्र की आयु पूर्ण कर जम्बू द्वीप के भरतक्षेत्र की अयोध्यानगरी में इक्ष्वाकु वंशी काश्यप गोत्री स्वयंवर (संवर) नामक राजा की सिद्धार्था नामक पटरानी के गर्भ में वैशाख शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन सातवें शुभ पुनर्वसु नक्षत्र में प्रविष्ट हुआ और नौ माह के बाद माघ मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन अदिति योग में पुत्र के रूप में उत्पन्न हुआ।

जन्म के साथ ही जहाँ तीन लोक में सुख का संचार हुआ वहीं सौधर्म इन्द्र का आसन कंपायमान हुआ। उसने अवधिज्ञान से जाना कि अयोध्या में त्रिलोकीनाथ का जन्म हुआ है अतः वह अपनी शची एवं देवपरिकर के साथ अयोध्या आया और बालक को लेकर सुमेरु पर्वत पर ले गया जहाँ क्षीरसागर के जल से 108 कलशों से तीर्थंकर बालक का अभिषेक किया तथा श्री अभिनन्दननाथ के नाम से उनका जयघोष किया।

श्री अभिनन्दननाथ जैनधर्म के तृतीय तीर्थंकर श्री संभवनाथ के बाद 10 लाख करोड़ वर्ष का अन्तराल व्यतीत होने पर उत्पन्न हुए थे। उनकी आयु भी इसी में समाहित थी। वे अन्य तीर्थंकरों की तरह ही जन्म से ही मति, श्रुत, अवधि, तीन ज्ञान के धारी थे। 50 लाख पूर्व इनकी आयु थी। 350 धनुष ऊँचा शरीर था। वे बालचन्द्रमा के समान कांतियुक्त थे। उनका वर्णन सुवर्णमय था। उनकी कुमारावस्था के 12,500 लाख पूर्व व्यतीत होने पर उनके पिता नृपति स्वयंवर ने अपना राज्य इन्हें सौंपकर वन को प्रस्थान कर गये और कहा कि तुम इस राज्य का उपभोग करो।

राज्यभार ग्रहण कर श्री अभिनन्दननाथ ने अपने कौशल से प्रजा का हित संवर्धन किया। अन्य राजागण भी उनकी कीर्ति से प्रभावी हुए और उन्होंने उनकी अधिनता स्वीकार कर ली। वैसे भी जिनके पास शुद्धक्षायिक सम्यग्दर्शन हो और सत्ता में तीर्थंकर नामक पुण्य प्रकृति हो, उसके वैभव का कहना ही क्या।

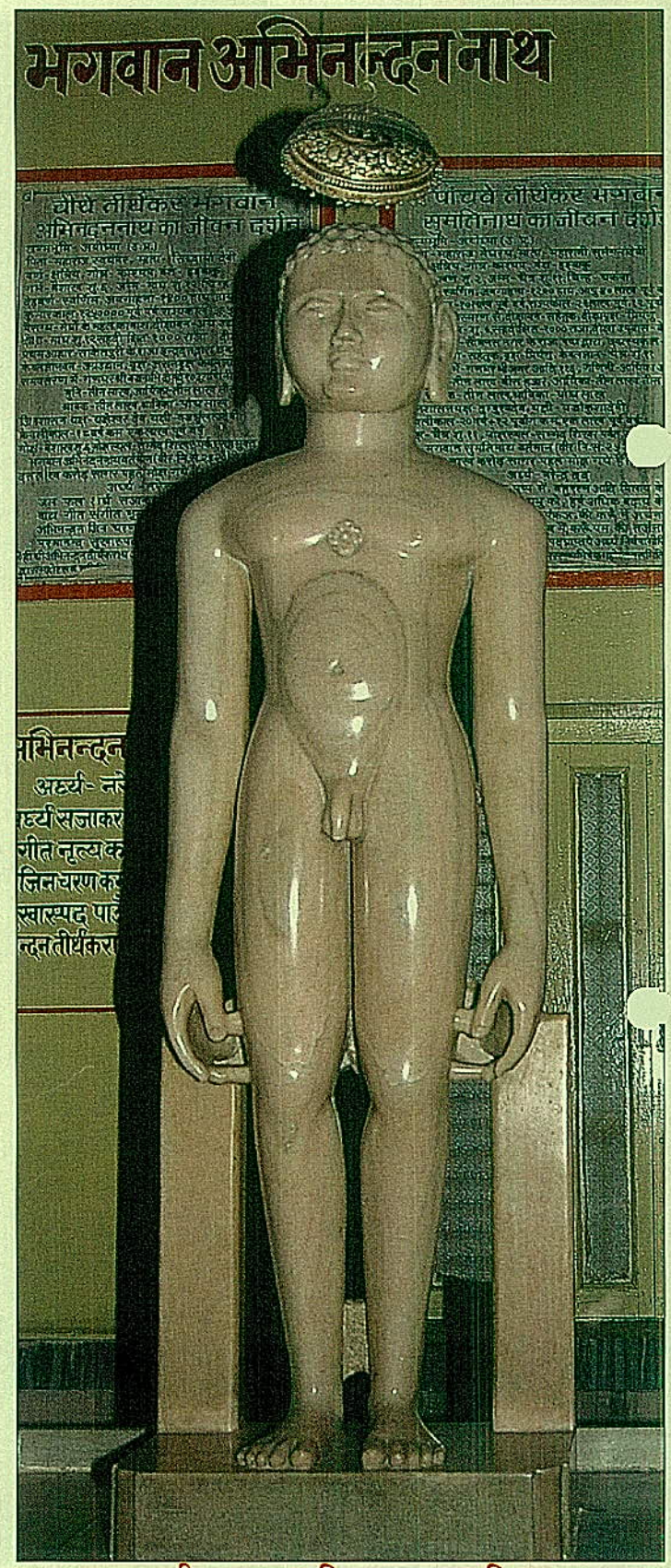


भगवान श्री 1008 अभिनन्दननाथ, हस्तिनापुर



सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

उनके गुणों का वर्णन करते हुए आचार्यश्री गुणभद्र ने लिखा है कि -

**स धीरललितः पूर्वं राज्ये धीरोद्धतो यमी ।**
**धीरः प्रशान्तः पर्यन्ते धीरोदात्तत्वमीयिवान् ।।**
**अफलन् शक्तयस्तिस्रः सिद्धिं धर्मानुबन्धिनीम् ।**
**ता एव शक्तयो या हि लोकद्वयहितावहाः ।।**
**कीर्तौ श्रुतिः स्तुतौ तस्य गीतिर्वर्णाक्षरांकिता ।**
**प्रीतिर्दृष्टौ जनस्यासीत्स्मृतिश्च गुणगोचरा ।।**
**गुणैः प्रागेव सम्पूर्णः स सर्वैराभिगामिकैः ।**
**न चेत्किं सेवितुं गर्भे निलिम्पाः कम्पितासनाः ।।**

अर्थात् वे भगवान् कुमार अवस्था में धीर और उद्धत थे, संयमी अवस्था में धीर और प्रशान्त थे तथा अंतिम अवस्था में धीर और उदात्त अवस्था को प्राप्त हुए थे। उनकी उत्साह, मंत्र और प्रभुत्व इन तीनों शक्तियो ने धर्मानुबन्धिनी सिद्धि को फलीभूत किया था सो ठीक ही है क्योंकि शक्तियाँ वही हैं जो कि दोनों लोकों में हित करने वाली हैं। उनकी कीर्ति में शास्त्र भरे पड़े थे, स्तुति में वर्ण और अक्षरों से अंकित अनेक गीत थे, मनुष्यों की दृष्टि में उनकी प्रीति थी और उनका स्मरण सदा गुणों के विवेचन के समय होता था। वे उत्पन्न होने के पूर्व ही समस्त उत्तम गुणों से परिपूर्ण थे। यदि ऐसा न होता तो गर्भ में ही उनकी सेवा करने के लिए देवों के आसन कंपायमान क्यों होते?

श्री अभिनंदननाथ ने विवाहित जीवन व्यतीत किया। कालान्तर में पूर्व भव से ही जिन्होंने रत्नत्रय की कामना की है ऐसे राजा अभिनन्दननाथ के राज्यकाल के 36500 लाख पूर्व बीत गये और 8 पूर्वांग शेष रहे तब बादलों में बने महल के क्षणभर में विनष्ट होने को देखकर उन्हें संसार की असारता का स्मरण आया और वैराग्य उत्पन्न हो गया। उनके वैराग्य को जानकर लौकान्तिक देवों ने आकर उनकी पूजा की और देवों ने तथा मनुष्यों ने हस्तचित्रा नामक पालकी पर उन्हें आरूढ़ कराकर माघ शुक्ल द्वादशी के दिन अपने जन्म नक्षत्र पुनर्वसु के उदय रहते वेला का नियम लेकर एक हजार राजाओं के साथ जिन दीक्षा ग्रहण कर ली। दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हुआ। उनका प्रथम आहार अयोध्या के राजा इन्द्रदत्त के यहाँ हुआ। वहाँ पंचाश्चर्य हुए।

छद्मस्थ अवस्था के 18 हजार वर्ष मौनपूर्वक तपस्या के उपरान्त पौष शुक्ल चतुर्दशी के दिन सायंकाल पुनर्वसु नक्षत्र में असनवृक्ष के नीचे उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। देवों ने आकर केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया और अरहन्त जिनेन्द्र श्री अभिनन्दननाथ की पूजा की।

तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ का अरहन्त अवस्था में समवशरण लगा। उसमें वज्रनाभि (वज्रचमर) आदि एक सौ तीन गणधर, शरीर से ममत्व छोड़ने वाले दो हजार पाँच सौ पूर्वधारी, दो लाख तीस हजार पचास शिक्षक, नौ हजार आठ सौ अवधिज्ञानी, सोलह हजार केवलज्ञानी, उन्नीस हजार विक्रिया ऋद्धि के धारक, ग्यारह हजार छः सौ पचास मनःपर्ययज्ञानी और ग्यारह हजार प्रचण्डवादी उनके चरणों की निरंतर वंदना करते थे। इस तरह वे सब मिलाकर तीन लाख मुनियों के स्वामी थे। मेरुषेणा आदि तीन लाख तीस हजार छः सौ आर्यिकाओं से सहित थे, तीन लाख श्रावक उनके चरण युगल की पूजा करते थे, पाँच लाख श्राविकायें उनकी स्तुति करती थीं, असंख्यात देव-देवियों के द्वारा वे स्तुत्य थे, और संख्यात तिर्यंच उनकी सेवा करते थे। उनका कैवल्यकाल 18 वर्ष 8 पूर्वांग कम 1 लाख पूर्व का था। शिष्ट और भव्य जीवों की बारह सभाओं के नायक भगवान अभिनन्दननाथ ने धर्मवृष्टि करते हुए इस आर्यखण्ड की वसुधा पर दूर-दूर तक विहार किया। इच्छा के बिना ही विहार करते हुए वे सम्मेदगिरि पर जा पहुँचे। वहाँ एक मास तक दिव्यध्वनि से रहित होकर ध्यानारूढ़ रहे। उस समय वे ध्यान काल में होने वाली योगनिरोध आदि क्रियाओं से युक्त थे, समुच्छिन्न क्रियाप्रतिपाती और व्युपरतक्रियानिवर्ती नामक दो ध्यानों से रहित थे। अत्यन्त निर्मल थे, और प्रतिमायोग को धारण किये हुए थे।

श्री सम्मेदशिखर से उन्होंने वैशाख शुक्ल षष्ठी के दिन प्रातःकाल के समय पुनर्वसु नामक सप्तम नक्षत्र में 16 हजार मुनियों के साथ खड्गासन से परम पद निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त किया। उसी समय भक्ति से जिनको आठों अंग नमित हो रहे हैं; ऐसे इन्द्र ने आकर उन त्रिलोकीनाथ की पूजा और स्तुति की।

तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ भगवान ने इन्द्रों के द्वारा पुण्यमयी लक्ष्मी को प्राप्त करने के बाद भी आत्मलक्ष्मी को प्राप्त किया और मोक्षलक्ष्मी का आलिंगन किया क्योंकि मोक्ष का कभी अभाव नहीं होता। उन्होंने निश्चय और व्यवहार इन दोनों नयों से समस्त पदार्थों का विचार किया और अन्त में आत्म रूप वस्तु को उपादेय माना। वे तीनों लोकों के प्राणियों द्वारा पूजे गये किन्तु उन्होंने निज पूजा को अपना ध्येय नहीं माना और अनासक्त बने रहे। वे संसार के समस्त प्राणियों को भय दूर करने वाले तथा अपने अभिनन्दन नाम को सार्थक करने वाले सिद्ध हुए। जो जिन पूजा करता है वह अभिनन्दन जिनेन्द्र के गुणों को भी प्राप्त करता है। उन्होंने मोह शत्रु को जीतकर केवलज्ञान प्राप्त किया था। वह ज्ञान उनके लिए सुखकर था किन्तु उसी ज्ञान का दिव्य-ध्वनि रूप उपदेश सुनकर जगत के प्राणियों को अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आचार्यश्री समन्तभद्र स्वामी ने उनकी स्तुति करते हुए लिखा है कि -

**गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान्, दयावधूं क्षान्तिसखीमशिश्रियत् ।**
**समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये, द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन चायुजत् ।।**

अर्थात् हे भगवन् ! अनन्तज्ञानादि अन्तरंग और सकल लक्ष्मी आदि बहिरंग गुणों की वृद्धि होने से अभिनन्दन इस सार्थक नाम को धारण करने वाले आपने क्षमा रूप सखी से सहित दया रूप स्त्री का आश्रय लिया था तथा धर्म्यध्यान और शुक्लध्यान रूप समाधि के लिये आप अंतरंग और बहिरंग के भेद से दोनों प्रकार के निष्परिग्रहता रूप गुण से युक्त हुए थे।

ऐसे तीर्थंकर श्री अभिनन्दननाथ हम सबके लिए पथप्रदर्शक बने रहें; इस भाव से हम सब उनके प्रति नतमस्तक हैं।


जहां सत्य होता है वहां अहिंसा होती है ।

# भगवान महावीर स्वामी के विचारों से विश्व शांति

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

व्यक्ति विकास करना चाहता है- देह से लेकर आत्म तक। हम जिस परिवेश में होंगे वहाँ यदि अनुकूलता होगी तो विकास के अवसर होंगे और यदि प्रतिकूलता होगी तो विकास की गति रुकेगी। भगवान महावीर की दृष्टि में हमारी आत्मा ही सर्वोपरि साध्य और शरीर ही सर्वोत्तम साधन है। भगवान महावीर के विचार नैतिकता, शरणागत वात्सल्य, समभाव, सौहार्द और सर्वोत्कर्ष की भावना से युक्त हैं। भगवान महावीर स्वामी ने स्वात्मबल से विपरीत परिस्थितियाँ होते हुए भी उस युग में सर्वप्रथम पराधीनता, शोषण, नरबलि, पशुबलि, यज्ञकर्म में हिंसा, नारी परतंत्रता आदि दुष्प्रवृत्तियों का विरोध किया और प्राणी-प्राणी में एकात्म रूप समानता मानकर अमीर-गरीब और ऊँच-नीच की दूरी समाप्त करने के लिए प्राणी हितार्थ अहिंसक एवं अपरिग्रही क्रांति का सूत्रपात किया। उनकी यह क्रांति न एक के लिए थी, न अनेक के लिए थी; बल्कि सबके लिए थी। यह वर्गोदय के विपरीत सर्वोदय की सार्थक पहल थी। उनका मानना था कि मनुष्य जन्म से न तो दुराचारी होता है और न सदाचारी; बल्कि उसके कुकर्म ही उसे दुराचारी और सुकर्म ही सदाचारी बनाते हैं। उन्होंने जातिमूलक और दैवमूलक व्यवस्था के विपरीत पुरुषार्थवादी कर्ममूलक व्यवस्था को उचित मानते हुए उद्घोष किया कि मनुष्य जन्म से नहीं अपितु कर्म से महान बनता है अतः महान बनने के लिए ऐसे विचार एवं कार्य किये जायें जिनसे किसी भी प्राणी को कष्ट न हो। यही कारण है कि उन्होंने शारीरिक (कायिक) हिंसा के साथ-साथ वैचारिक हिंसा के त्याग पर बल दिया। यह सत्य है कि मन के विचार ही वाणी में प्रस्फुटित होते हैं और कालान्तर में हिंसा का मार्ग पकड़कर शारीरिक क्षति या कायिक हिंसा में बदल जाते हैं अतः सबसे पहले हमें मन को पवित्र बनाना चाहिए। मन की पवित्रता पवित्र भावों से ही आ सकती है। 'भगवती आराधना' में आचार्य शिवार्य ने लिखा है कि-

**जह ते ण पियं दुक्खं तहेव तेसिं पि जाण जीवाणं।**

**एवं णच्चा अप्पोवमिवो जीवेसु होदि सदा।।**

अर्थात जिस प्रकार तुम्हें दुःख प्रिय नहीं है वैसे ही अन्य जीवों को भी दुःख प्रिय नहीं है; ऐसा ज्ञात कर सर्व जीवों को आत्मा के समान समझकर दुःख से निवृत्त हो।

यह सर्वोदय तीर्थ आज भी जयवन्त है, जरूरी है। भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित सर्वोदय का तात्पर्य था- मनुष्य के अन्तर में विद्यमान सद्गुणों का उदय। सद्गुणों के द्वारा ही मनुष्य अपने विकारों पर विजय प्राप्त कर सकता है। विकारों पर पूर्ण विजय रूप लक्ष्य से परम लक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

वास्तव में सर्वोदय का सिद्धांत ऐसी आध्यात्मिक भित्तियों पर स्थित है जो व्यक्ति को अकर्मण्य से कर्मण्य और कर्तव्य परायण बनने की प्रेरणा देता है; साथ ही पर से निज की ओर और निज से पर की ओर जाने का संकेत भी; अतः पहले स्वयं का आचरण निर्मल बनायें, बाद में अपने जैसा चारित्रवान बनने की दूसरों को प्रेरणा दें।

भगवान महावीर स्वामी ने जीवन के विकास हेतु अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य; ये पाँच सूत्र बताये; जिनसे व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। वास्तव में सामाजिक उत्थान करने के लिए एक यह आदर्श व्यवस्था है। यह सिद्धांत सामाजिक जीवन का इस प्रकार संगठन व संवर्धन करना चाहते हैं कि प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति अपना पूर्ण विकास कर सके। प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह दूसरे के विकास के लिए साधन उपलब्ध कराए।

भगवान महावीर के विचार एक वैचारिक क्रांति हैं जिनका हिंसा में नहीं अहिंसा में अटूट विश्वास है। इन विचारों का पालक सत्याचरण में आस्था रखता है। अचौर्य उसकी साधना है और अपरिग्रह उसका लक्ष्य है। वह



धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

आवश्यकता से अधिक धन का संचय नहीं बल्कि त्याग करता है और वह भी स्वेच्छा से। वह जोड़ने से अधिक छोड़ने में विश्वास करता है। तभी उसे ब्रह्मचर्य रूप साध्य की प्राप्ति होती है। आज जीवन में सत्य की साधना कठिन हो गयी है जबकि इसके बिना सामाजिक समरसता, शुचिता और सर्वोदय की भावना नहीं बन सकती है। सच्चाई के रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति ही सामाजिक होता है जिसका लक्ष्य है - 'भूमा वै सुखं, नाल्पे सुखमस्ति' अर्थात समष्टि के सुख में ही मानव का सच्चा सुख निहित है, अल्प के सुख में सुख नहीं है।

भगवान महावीर ने कहा कि कामनाओं को जीतो; क्योंकि कामनाओं का कोई अन्त नहीं है। कामनायें असीम हैं और व्यक्ति भी अनेक हैं। हम सोचें कि हम किसको क्या दे सकते हैं? दाता का भाव रखना समष्टि हित के लिए जरूरी है। दूसरे या समष्टि के उत्थान की चाह सर्वोदय की हार्दिक भावना का प्रतीक है।

आज हम जिस आतंकवाद को देख रहे हैं उसके मूल में कहीं न कहीं अधिकतम भूमि, अधिकतम राज्य और अधिकतम संसाधनों पर अपना कब्जा करना है। भगवान महावीर की दृष्टि में यह सोच ही गलत है। वे कहते हैं कि प्रकृति के पास इतना है कि वह तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है' लेकिन तुम्हारी इच्छाओं की नहीं। क्योंकि इच्छायें असीम होती हैं जिनकी पूर्ति न इच्छा करने वाला कर सकता है और न ही कोई शासक या राजा। अतः सर्वप्रथम अपनी इच्छाओं को संयमित करो और जो संसाधन तुम्हें प्राप्त हैं उनका बेहतर उपयोग करते हुये जीना सीखो। जो व्यक्ति सहअस्तित्व में विश्वास रखता है, दूसरे के विचारों का आदर करता है वह कभी भी किसी की हिंसा नहीं कर सकता। जरूरी है कि हम व्यक्ति के मन में सदविचार और अहिंसक भावनाओं को प्रतिष्ठित करें। उसे संयम से जीना सिखायें।

भगवान महावीर ने कर चोरी को राष्ट्रद्रोह मानते हुये इसे असत्य आचरण माना है। जो राष्ट्र के विकास के लिए आर्थिक विषमता दूर करना चाहते हैं उन्हें शोषण और शोषणकारियों से बचना चाहिए। आर्थिक विषमता के कारण सामाजिक शोषण भी होता है। यह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष चोरी से उत्पन्न होता है। इससे बचने के लिए भगवान महावीर ने कहा कि श्रम करो, श्रम का आदर करना सीखो। वे सच्चे अर्थों में श्रमण थे। उन्होंने अस्तेय / अचौर्य को परिभाषित करते हुये कहा कि - 'अदत्तादानमस्तेयं' अर्थात बिना दी हुई वस्तु का ग्रहण करना चोरी है। कल, बल, छल या दूसरे तरीकों से जिस पर अपना अधिकार नहीं है उन वस्तुओं का स्वयं ग्रहण करना, दूसरों को दे देना चोरी है। इससे बचना चाहिए। जो व्यक्ति अस्तेय भावना को अपना लेता है वह राष्ट्र की संपदा का सबसे बड़ा संरक्षक होता है।

भगवान महावीर ने बताया कि संसार के सभी प्राणियों में एक जैसी आत्मा है। भले ही उनके शरीर उनकी गतियों के अनुरूप हो सकते हैं। इस भेद के आधार पर किसी का हनन नहीं करना चाहिए। जीओ और जीने दो का सिद्धांत यही बताता है। यदि हमें अपने अस्तित्व को बचाये रखना है तो हमें दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार करना चाहिए। यही सहिष्णुता है और यही सहअस्तित्व की भावना है।

समाज के कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए अपनी संपदा का स्वेच्छा से विसर्जन करना अपरिग्रह है। समाज में संग्रह की प्रवृत्ति उथल-पुथल मचाती है। यदि इसका उचित समाधान नहीं किया गया तो जनसंघर्ष या वर्ग संघर्ष की स्थिति बनती है। अतः ना तो अधिक धन का प्रदर्शन करना चाहिए और ना ही आवश्यकता से अधिक धन का संचय करना चाहिए। तभी हम शांति से जीवन यापन कर सकते हैं। सुख, शांति त्याग में है, संचय में नहीं।

## भगवान महावीर स्वामी

- उत्सव जैन कवि, नौगामा (बांसवाड़ा) राज.

भगवान महावीर स्वामी के,
सिद्धांतों पर अब चलना बहुत जरूरी है।
क्योंकि हिंसा का तांडव नृत्य,
अब रोकना बहुत जरूरी है।।
पवित्र स्थानों पर अपवित्रता हो रही,
उस पर विराम बहुत जरूरी है।
क्योंकि भूकम्प और तुफान,
को देख हमें सचेत होना बहुत जरूरी है।।
बेकसुर पशु पक्षियों का कत्ल,
रोकना बहुत जरूरी है।
अब पेड़ पौधों की रक्षा करना,
बहुत जरूरी है।।
क्योंकि अतिवृष्टि अनावृष्टि पर,
विचाना करना बहुत जरूरी है।
पूरे विश्व में आज अशान्ति है,
अब विश्व शांति की कामना बहुत जरूरी है।।
जियो और जीने दो का सिद्धांत,
अब घर घर पहुँचाना बहुत जरूरी है।
आओ 'उत्सव जैन' कहता,
अहिंसा की अखण्ड ज्योत जलाना बहुत जरूरी है।


स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

# वीर वर्धमान चरित का वैशिष्ट्य एवं जीवन सूत्र

- अजित जैन 'जलज', टीकमगढ़

भगवान महावीर स्वामी और उनके दो सार्वभौमिक सत्यों अहिंसा एवं अनेकांत का समुचित उपयोग हम आज तक नहीं कर सके हैं। जिस कर्मकांड एवं पाखण्ड के विरोध में महावीर जीवन भर देशना देते रहे उसी में उलझे उनके अनुयायी आज महावीर को पहचान नहीं पा रहे हैं।

कितनी बड़ी विडम्बना है कि वर्तमान शासन नायक अतिवीर सन्मति का जीवन चरित एवं जैनों में सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाओं के रूप में स्थान नहीं पाता है। रामचरित मानस एवं गीता की तरह कोई एक सरल सरस महावीर-महापुराण अभी तक सभी जिनभक्तों तक नहीं पहुँच पाया है

वीर वर्धमान चरित प्राकृत भाषा में तो नहीं मिलता, परन्तु अपभ्रंश भाषा में बारहवीं शताब्दी में विबुध श्रीधर ने (संभवतः प्रथम स्वतंत्र महावीर चरित) इसे लिखा जिसका शोधपूर्वक सूक्ष्मेक्षिका पूर्ण सम्पादन डॉ. राजाराम जैन (जैन इतिहास रत्न) ने किया। तत्पश्चात पन्द्रहवीं शताब्दी में भट्टारक सकल कीर्ति ने संस्कृत में वीर वर्धमान चरितम् ग्रन्थ रचा जिसका संपादन पं. हीरालाल जैन सिद्धांत शास्त्री ने किया। इसी ग्रन्थ के आधार पर बुन्देली कवि नवल शाह ने हिन्दी बुन्देली में छंदबद्ध ग्रंथ वर्धमान पुराण उन्नीसवीं शताब्दी में लिखा।

उपरोक्त तीनों ग्रंथों का तुलनात्मक सतत् स्वाध्याय करने पर मुझे अतीव आनंद प्राप्त हुआ तथा वीरेन्द्र कुमार जैन की कालजयी कृति अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर का स्मरण होता रहा। चार खण्डों में प्रकाशित इस ग्रंथ को 15 वर्ष पूर्व पढ़ने के पश्चात भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित होते ही इसे विगत 3-4 वर्षों से लगातार पुनः पढ़ रहा है।

इन सब ग्रंथों को पढ़कर मुझे वर्षों से एक सर्वप्रिय, सर्वसुलभ वीर-गाथा की आवश्यकता लगती रही है। वीर वर्धमान चरित की कतिपय विशेषताओं को विज्ञजनों के सम्मुख रखने की भावना के चलते ही यह लघु लेख लिखा जा सका है। यदि इस बालोचित प्रयास से महावीर महापुराण की ओर किसी सक्षम महापुरुष का ध्यान आकृष्ट हो सका तो मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझूँगा।

**ग्रन्थ प्रतिष्ठा :** दिल्ली के राजा अनंगपाल के राजदरबारी साहू नट्टल से कवि विबुध श्रीधर ने कहा 'आपने एक आदिनाथ मंदिर का निर्माण कराकर उस पर पचरंगे झण्डे को भी चढ़ाया है। आपने जिस प्रकार उस भव्य मंदिर की प्रतिष्ठा की है उसी प्रकार आप एक पार्श्वनाथ चरित की रचना भी करवाइए, जिससे कि आपको पूर्ण सुख समृद्धि मिल सके तथा जो कालान्तर में मोक्ष प्राप्ति का कारण बन सके।

**ढिल्ली से बनी दिल्ली :** बुंदेलखण्ड से दिल्ली जाने वाले मजदूर आज भी दिल्ली को ढिल्ली ही कहते हैं। विबुध श्रीधर ने अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वह यमुना नदी पार करके हरयाणा से ढिल्ली आया था। पृथ्वीराज रासो के अनुसार पृथ्वीराज चौहान की माँ तथा तोमरवंशी राजा अनंगपाल की पुत्री ने पृथ्वीराज को सुनाया - 'मेरे पिता अनंगपाल के पुरखा राजा कल्हण ने एक स्थान पर देखा कि एक खरगोश उनके शिकारी कुत्ते पर आक्रमण कर रहा था अतः उसे वीर भूमि समझ कर उस स्थान पर लोहे की एक कीली (किल्ली) गाड़ कर उसका नाम किल्ली अथवा कल्हणपुर रखा।

अनंगपाल के व्यास ने जिस स्थान पर किल्ली गाड़ी थी, उसे अनंगपाल ने ढीला कर निकलवा दिया। तभी से उसका नाम ढिल्ली पड़ गया।

'हूँ गड्डि गयौ किल्ली सज्जीव, हल्लाय करी ढिल्ली सईव'

मोक्ष में परमानंद : हम सब मोक्ष मार्ग पर चलने वाले मुमुक्षु मोक्ष सुख की महत्ता या तो जानते नहीं हैं, या फिर मानते नहीं हैं। हम समाज में धनकुबेरों एवं सत्तापुरुषों को ही सर्वोपरि समझने की सामाजिकता रखते हैं। राजा, महाराजा चक्रवर्ती, भोगभूमि एवं स्वर्ग लोक के सुखों के आगे की हम कल्पना ही नहीं कर पाते हैं।

**मोक्ष महल के सुख जिनवर यों बतलाते हैं :-**

इस संसार में जो अहमिन्द्रादि देव हैं, चक्रवर्ती आदि मनुष्य हैं, भोगभूमिज आर्य और पशु हैं तथा व्यंतरादिक हैं। इन सबने जितना सुख आज तक भोगा है, वर्तमान में प्रतिदिन भोग रहे हैं और भविष्यकाल में भोगेंगे। वह सब विषय जनित सुख यदि एकत्र पिण्डित कर दिया जाये तो उस पिण्डीकृत सुख से अनन्त गुणित विषयातीत सुख को कर्म शरीर से रहित सिद्ध जीव एक समय में भोगते हैं।

**सतत वर्धमान - अनन्य आदर्श अतिवीर**

भगवान आदिनाथ से भी पहले हुये भील पुरुरवा से लेकर तीर्थंकर महावीर बनने तक जीव के सभी योनियों में गुजरने और उतार-चढ़ाव के प्रेरक प्रसंगों से सज्जित सम्पूर्ण वीर-वर्णन में जीवमात्र को परम सुख की बतलाते मनुष्य को सम्यक पुरुषार्थ करने के लिये प्रेरित किया गया है।

इस अनुपम आख्यान की विवेचना करने से पूर्व पं. दौलतराम जी के शब्दों में परम प्रभु की पूजा कर लेते हैं :-

'जय श्री वीर जिनेन्द्र चन्द्र, शत इन्द्रवंद्य जगतारं।
सिद्धारथ कुल कमल अमल रवि, भवि भूधर पवि भारं।।
गुनमनि कोष अदोष मोषपति, विपिन कषाय तुषारं।
मदन कदन शिव सदन पद नमित, नित अनमित यति सारं।।

**1. पुरुरवा का पुरुषार्थ :-** भीलों का स्वामी पुरुरवा सागरसेन मुनिराज को मृग समझकर धनुष वाण से मारने ही वाला था कि उसकी धर्मपत्नी कालिका ने इस कुकृत्य से रोक दिया। मुनिराज के मंगलमय उपदेश से भिल्लराज ने मद्य मांसादि का भक्षण और जीवघात आदि का त्याग कर श्रावक व्रत अंगीकार किया। व्रत पालन से वह पुण्यात्मा सौधर्म महाकल्प में देव हुआ।

वचन न तोड़ा, मांस न खाया, भील पुरुरवा चला गया।

स्वर्ग में जाते-जाते बोला, कर लो भैया जीव दया।।

जीवन सूत्र :- जैनत्व तथा अहिंसा के पालन से एक शिकारी असभ्य वनवासी के जीवन बदल जाने की यह घटना जैन धर्म के दरवाजे मानव मात्र के लिये खुले होने की घोषणा करती है और हमें वर्तमान में बंद अपने दरवाजे खोलने पर विचार अवश्य करना चाहिए।

महापुरुष महावीर बनने की महायात्रा में एक महिला की पावन प्रेरणा एवं व्रतों के पालन में उसकी महत्ता स्पष्ट होती है।

अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर में वीरेन्द्र कुमार जैन महिला के महत्व को महिमा मंडित कर देते हैं।

वीरेन्द्र विचार - स्त्री को सन्मुख लोगे तो वह अनायास भीतर समा जायेगी और रिक्त भर कर मुक्त कर देगी। रिक्त और विरह भीतर दिया गया है कि जीवन उस व्यथा में से रस खींच कर वर्धमान हो। विरह जहाँ भी तीव्रतम है, वहीं पूर्णतम मिलन संभव है।

तुम ब्रह्म हो तो नारी उसकी चर्या है क्योंकि ब्रह्म की चर्या उसी में होकर संभव है। वह तुम्हारे ब्रह्मचर्य की भूमि और कसौटी एक साथ है।

**2. मरीचि का मिथ्यात्व :** सम्यग्दर्शन के प्रभाव से भिल्लराज देव गति के सुख भोगने के पश्चात भरत चक्रवर्ती के पुत्र के रूप में मरीचि हुआ। जिनेश्वर ऋषभ के साथ गुणों में निपुण मरीचि भी संयमधारी हो गया। दुःखकारी परीषहों की पीड़ा से घबराकर वह सहसा ही कुभाव को प्राप्त हो गया।

ऋषभदेव ने भरत से कहा- 'तुम्हारा पुत्र अभी तो धर्म से च्युत होकर मरेगा, जियेगा किन्तु आगे जाकर मिथ्यात्व से, स्खलित होकर तथा भव को क्षयकर चौबीसवाँ तीर्थंकर होगा।' जिनेन्द्र कथन कभी मिथ्या नहीं होते यह निश्चय कर उस मरीचि ने हर्षपूर्वक तत्काल ही नया तीर्थ स्थापित किया।

जीवन-सूत्र : सांसारिक सुखों की सर्वश्रेष्ठ सत्ता 'चक्रवर्ती' का पुत्र होना और अलौकिक आनंद के साक्षात स्वरूप आदि तीर्थंकर का पोता होना और उनकी पुत्र के रूप में प्राप्ति- इनसे अधिक अनुकूलताओं के संबंध में आप सोच भी नहीं सकते हैं। फिर भी

अपने अहंकार एवं प्रतिकूलता (परीषह) पलायन से प्राणी ने स्वयं का जीवन तो धूल धूसरित किया ही अन्य असंख्य लोगों के मतिभ्रम का कारण भी बना।

'जिनेन्द्र कथन कभी मिथ्या नहीं होते'- यह सोचकर मिथ्यात्व की माया में मरीचि फँसा।

साक्षात भगवान की वाणी का किस प्रकार दुरुपयोग हो सकता है इसका उक्त उदाहरण से बेहतर अन्य उदाहरण दुर्लभ हैं। धर्म के नाम पर पिछले हजारों वर्षों में हुई क्रूरताओं के कारणों की विवेचना उक्त एक वाक्य से की जा सकती है।

जिनेन्द्र भगवान से गणधर तक एवं गणधर से जिनवाणी लेखन तक आते-आते परम प्रभु के चरम सत्य का अनंतानंतवाँ अंश बच पाता है फिर भी लोग अपने अपने अंशों को पकड़कर इस कदर आपस में उलझे हुये हैं कि उन्हें सम्यत्व की सुगंध ही नहीं आ पाती।

वीरेन्द्र-विचार :- हर अनुगमन एक हद के बाद मिथ्यादर्शन हो ही जाता है। शुद्ध सत्यार्थी अनुयायी और स्थिति पोषक से ही नहीं सकता।

- परम्परा केवल प्रज्ञा की होती है, विधि विधान की नहीं होती। - बुद्धि कब कुछ समझ पाती है, खण्ड का केवल खण्ड ज्ञान ही वह बेचारी कर सकती है। अखण्ड सत्य का ग्रहण हृदय से ही संभव है।

- शास्त्र तात्कालिक होता है, त्रैकालिक नहीं। शास्त्र केवल सूचक है, वह दिशा दर्शक यंत्र मात्र है।

**3. मिथ्यात्व की महिमा :** मरीचि यथाकाल मरण को प्राप्त होकर अज्ञान तप के प्रभाव से ब्रह्म कल्प में देव हुआ फिर क्रमशः जटिल ब्राह्मण, सौधर्म देव, पुष्पमित्र द्विज, सौधर्म देव, अग्नि सह ब्राह्मण, सनतकुमार देव, अग्निमित्र विप्र, माहेन्द्र देव, भारद्वाज ब्राह्मण, माहेन्द्र देव हुआ।

मनुष्यों के रूप में मिथ्यामत विद्वान परिव्राजक होकर अज्ञान तपश्चर्या से देवगति पाता रहा।

जीवन सूत्र : विद्या एवं तप का पुरुषार्थ कभी निष्फल नहीं जाता। जब व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से कर्म पर केन्द्रित होता है तो उसे वांछित सफलता प्राप्त हो ही जाती है।

वीरेन्द्र-विचार : व्यक्तित्व को विश्वास बनाते हैं। विश्वासों को क्रिया से बल मिलता है। मान्यताएँ भावना क्षेत्र की गहराई में उगती हैं पर वे चिरस्थायी रहती हैं।

**4. मिथ्यात्व की मृग मरीचिका :** तत्पश्चात वहाँ से च्युत होकर और कुमार्ग के प्रकट करने से उपार्जित महापाप कर्म के विपाक से निन्द्य सभी अधोगतियों में प्रवेश करके असंख्यात वर्ष प्रमाण चिर काल तक सुखों से दूर और दुखों से भरपूर होकर परिभ्रमण करता हुआ दुष्कर्मों की श्रृंखला से वह सर्वदुखों के निधानभूत त्रस स्थावर योनियों में नाना दुखों से पीड़ित हो मिथ्यात्व के फल से महादुख को भोगता रहा।

इतर निगोद भ्रम्यौ सो जाइ, सागर एक प्रयंत रहाइ।
असुर कुमार परौ बहु घैर, नरकन मांहि लखावै वैर।
साढ़हि सहस आक तरू होइ, पायो दुख बहुगिने न कोइ।
असी सहस भव सीयै धार, भयौ नीम तरू बीस हजार।।

केला वृक्ष, चन्दन तरु, कनयड़, गणिका, गज, खर, श्वान, नपुंसक, नारी, रजक, गर्भपात, में लाखों करोड़ों भवों में भटकता रहा।

भट्टारक सकलकीर्ति लिखते हैं- यदि एक ओर सर्व पाप एकत्रित किये जावें और दूसरी ओर मिथ्यात्व रखा जावे तो ज्ञानीजन उनका अंतर मेरू और सरसों के दाने जैसा कहते हैं। (अर्थात अकेला मिथ्यात्व सुमेरू के समान भारी है और सर्वपाप सरसों के समान तुच्छ हैं)

इस कथन को भक्त कवि नवल शाह इस प्रकार कहते हैं -


धर्म वही है जो जीने की कला सिखलाता है।

सरसों सम है पाप, मिथ्या मेरू समान दुख।
प्राण अंत बुध आप, ऐसी जान न कीजिए।।

जीवन-सूत्र - तात्कालिक सुख वैभव प्राप्त हो जाने का आशय यह कदापि नहीं होता है कि जीव का आचार विचार सत्य तथा सत्ता से प्रमाणित हो गया है अन्ततः उसे भावनाओं एवं कर्मों के अनुसार कष्ट भुगतने ही पड़ेंगे।

वीरेन्द्र-विचार :- अज्ञानी नियतिबद्ध है पर ज्ञानी स्वयं अपना नियंता।

- जीवन समय के धागों से बुनकर बनाया गया कपड़ा।

**5. परम पथ पर पुनः पतन :-** पुरूरवा से प्रारम्भ उत्थान की उजली राह मरिची ने मटमैली कर दी। असंख्य भवों में कर्मों का फल भुगतने के बाद एक बार फिर उसे विश्वनंदि के रूप में श्रमण साधु बनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

राजकाज में उद्यान के कारण विश्वनंदी की विशाख नंदी से लड़ाई हुई। महाबली विश्वनंदी ने कैंथ के पेड़ को जड़मूल से उखाड़ दिया। शिला स्तम्भ को अपने प्रहार से शतखण्ड कर दिया परन्तु दीनता से भागते विशाखभूति को देखकर वैराग्य हो गया।

कठोर तप करते हुये विश्वनंदी जब एकदा गाय के कारण गिर गये तो यह देखकर विशाखनंदी में मुनि का खूब उपहास किया।

उसके दुर्वचन सुनकर क्रोध और मान कषाय के उदय से यह मुनि कोप से रक्त नेत्र होकर मन बोला- अरे दुष्ट मेरे तप के माहात्म्य से तू इस प्रहास्य का स्वमूल नाशक महान कटुक फल पायेगा, इसमें कोई संदेह नहीं। यह निन्दित निदान करके वह मुनि सन्यास के साथ मरा और स्वर्ग में देव हुआ।

जीवन-सूत्र : शक्तिशाली होने पर भी क्षमा एवं करूणा का भाव जीवन-यात्रा में साधक है जबकि साधना में श्राप अन्ततः आत्मघात है।

वीरेन्द्र-विचार : नीति और प्रीति का राजमार्ग ही सरल और श्रेयस्कर है।

- दमन से नहीं शमन से ही देह अनुसारिणी हो सकती है।

**6. प्रतिशोध की प्रचंडाग्नि :-** देवगति से चयकर विश्वनंदी का जीव प्रथम नारायण त्रिपृष्ठ हुआ तो विशाखनंदी का जीव प्रतिनारायण अश्वग्रीव हुआ। प्रतिशोध की आग चेतना की अतल गहराइयों में अभी भी जल रही थी। मुनि पद का निदान पूरा न हो, यह कैसे संभव है? त्रिपृष्ठ पंचानन सिंह का वध करता है, कोटिशिला पर्वत को उठा लेता है और फिर युद्ध भूमि में अपने चक्र से अश्वग्रीव का वध करके प्रतिशोध पूरा करता है।

जीवन-सूत्र : हम अपने प्रतिदिन के जीवन में न जाने कितने संकल्पों विकल्पों से गुजरते रहते हैं। हमारे यही विचार आगे चलकर हमारे व्यक्तित्व को बनाते हैं। हमें हमेशा अपने चिंतन प्रवाह को देखने का प्रयास करना चाहिये।

वस्तुतः सामायिक एवं प्रतिक्रमण दो ऐसी अनमोल आवश्यकताएं हैं जिनके द्वारा हम समता का अभ्यास कर कषायों को कम कर सकते हैं।

वीरेन्द्र - विचार : प्रतिकार अहंकार में से आता है।

- यह आत्म तभी अपने अविकल रूप में प्रकट होता है जब लेने देने, करने कराने के सारे संकल्प और विकल्प समाप्त हो जाते हैं।

- प्रतिशोध की विजय, विजय नहीं अंतिम पराजय है।

**7. परिग्रह के पाप से नरेश को नरक :** नारायण त्रिपृष्ठ पूर्वोपार्जित पुण्य के परिपाक से सुदर्शनचक्र आदि सप्त रत्नों से अलंकृत, देव विद्याधर और सोलह हजार राजाओं से नमस्कृत और सोलह हजार राज पुत्रियों के साथ निरंतर नाना भोग भोगने लगा। ... बहुत आरंभ परिग्रह से तथा खोटी लेश्या से पाप बुद्धि रौद्र ध्यान से धर्म के बिना मरकर नरक गया।

जीवन सूत्र : भौतिक सुख संपदाओं का साम्राज्य सुखाभास भर है। सब धर्मों में परिग्रह को पाप माना गया है। महावीर परिग्रह के आधिक्य एवं राग से नरक का स्पष्ट विधान बता चुके हैं जो उन्होंने स्वयं भी भुगता है। यह सब जानकर भी हम अपरिग्रह के आराधना स्थलों पर भी अर्थ संचय की ही सर्वाधिक चर्चा करते हैं। अर्थ के उपार्जन में धर्म की भूमिका पर चर्चा कहीं नहीं होती है लेकिन धर्म के कार्य में अर्थ की उपासना सर्वत्र होने लगी है।

वीरेन्द्र विचार : घर-घर में गृह युद्ध अनिवरि चल रहा है। मनुष्य और मनुष्य के बीच, मित्र और मित्र के बीच आत्मीय स्वजनों के बीच भी निरन्तर गृहयुद्ध बरकरार है। वस्तुओं और व्यक्तियों के बीच हर समय लड़ाई जारी है।

**8. क्रूरता से करूणा की ओर अंतिम विजय यात्रा :**

नरकों के दुख भोगकर हरि त्रिपृष्ठ का जीव हरिणाधीश होता है। हिंसा में सतत संलग्न उस सिंह को दयावश दो नभचारण मुनियों ने प्रबोधित किया-

'अपने चित्त से शरीर के प्रति ममत्व भाव का सर्वथा परित्याग कर तथा जो करूणा से पवित्र है उस (धर्म) को (पालन) कर।

यतिवर के गुण गणों के प्रति अति पवित्र भावनाओं से वह सिंह शुद्ध लेश्या परिणामवाला हो गया। कठोर तप करके जिनवर के गुणों में अनुरक्त रहकर ही मरा अतः सौधर्म देव हुआ।

जीवन-सूत्र : उत्थान पतन के इस राजमार्ग में भव वन में भटकता हुआ प्राणी आखिर हिंसा के चरम पर पहुंचकर भी अहिंसा को पा ही जाता है।

- प्रतिकूलताओं के प्रबल प्रवाह में भी परिवर्तन का प्रदीप प्रज्ज्वलित किया जा सकता है।

- क्रूरता का त्याग और करूणा का पालन पवित्रता हेतु परमावश्यक है।

वीरेन्द्र-विचार : अभीप्सा अविचल हो तो बाधा ही राधा बन जाती है।

- पतन की सीमा है पर उत्थान तो अनंत में ही होता है।

- श्रेष्ठता सदा श्रेष्ठ तत्वों को ही आकर्षित करती है, समानधर्मी तत्व समानधर्मी कणों को ही आत्मसात कर पाते हैं।

- न सबल, न दुर्बल, स्वबल होना अच्छा है। क्योंकि स्वबल न किसी से पीड़ित होता है, न किसी को पीड़ित करता है।

**9. भौतिकता के त्याग से आध्यात्मिकता का उदय :**

देवगति के बाद कनकध्वज राजा के रूप में सम्यग्दर्शन का उपदेश ग्रहण कर दुर्द्धर तप से कापिष्ठ स्वर्ग में देव हुआ। फिर हरषेण राजा की पर्याय में दीक्षा लेकर फिर से देवगति प्राप्त की। अब प्रियदत्त चक्रवर्ती बना तो चक्रवर्ती की


हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

अतुल्य सुख सम्पदा का भी त्याग करने से देव बना और फिर नन्दन राजा के रूप में उत्तम तप एवं त्याग से पुष्पोत्तर विमान में इन्द्र पद प्राप्त किया।

जीवन-सूत्र : यदि अपना दृष्टिकोण सही (सम्यक) हो जाये तो यह सत्य सहजता से प्राप्त हो जाता है कि वास्तविक सुख वस्तुओं में नहीं बल्कि स्वयं की मानसिकता एवं आत्मिक अनुभूति में है।

एक शानदार गुलाब के फूल का भव्य चित्र सबको आकर्षक लग सकता है लेकिन वह साक्षात गुलाब के फूल और उसकी सुगंध के सामने कहीं नहीं टिक सकता। कुछ लोगों को फूल अच्छा लगता है तो अधिकांश को चित्र।

वीरेन्द्र-विचार : बुद्धि कब कुछ समझ पाती है। खण्ड का केवल खण्ड ज्ञान ही वह बेचारी कर सकती है। अखण्ड सत्य का ग्रहण हृदय से ही होता है।

- शुभाशुभ भाव, प्रतिक्रिया और कर्म करने को व्यक्ति स्वतंत्र है, जड़ कर्म परमाणुओं की क्या ताकत कि मनुष्य के न चाहते हुये उसकी चैतन्य आत्मा को बाँध ले।

- आत्मा अपने स्वाधीन संकल्प से कर्म करने या कर्म बंधन को स्वीकारने या नकारने को स्वतंत्र है।

### 10. वर्तमान शासन नायक वर्धमान :

प्रियकारिणी के गर्भ में आने से लेकर पावापुरी में परिनिर्वाण तक वीर जग में जीवमात्र का कल्याण करते हुये हम सबके लिये जिनशासन तीर्थ की स्थापना कर गये।

अतिवीर के लगभग सभी गणधर ब्राह्मण थे जिससे वैदिक एवं श्रमण धर्म एक-दूसरे के सहजीवी एवं संपूरक बन सके।

सिद्धार्थ पुत्र सन्मति ने तत्कालीन धर्मांधता को जानकर ऐसा अनेकांत दर्शन दिया जिसने सभी धर्मों को सापेक्ष सार्थकता प्रदान कर अहिंसा का विश्वविजयी शंखनाद किया।

पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धांत जैन धर्म की अपनी विशिष्ट पहचान है। महति महावीर को हम केवल उनके अंतिम भव से नहीं समझ सकते हैं लेकिन उनके सभी भवों के भ्रमण को जानकर, समझकर मात्र एक भव में सत्पथ प्राप्त कर सकते हैं।

पावनता के पथ पर अपना, रखिये पहला पग।
पहला पग न रूके कभी तो झुक जायेगा जग।।

जीवन-सूत्र : प्राकृतिक परिवेश में पुरूरवा का पुरुषार्थ अहंकारी विद्वान व साधक मरीचि से श्रेष्ठ था।

- मुनि पद पाकर भी अन्य की अनिष्ट कामना से नरक में जाना पड़ता है जबकि सिंह की पर्याय में भी अहिंसा के पालन से अमरत्व का पथ प्रशस्त होता है।

- तीन लोक की सम्पदा से राग त्रिपृष्ठ को पतन की ओर ले जाता है तो प्रियदत्त चक्रवर्ती का साम्राज्य त्याग उसका उत्थान उच्चतम की ओर करा देता है।

- अपने जीवन की आवश्यकताओं को शनैः शनैः सीमित करते जाना जिससे स्वावलम्बन बढ़ता जाये, स्वयं की एवं दूसरों की स्वतंत्रता सुनिश्चित होती जाये और इस स्वाभिमानी स्वभाव का सतत् वर्धमान होते जाना ही परमानंद पाने का पावन पथ है।

'अप्रमत्त तू, हो सजग अब,
चल स्व पद पथ पर, अनवरत।'

वीरेन्द्र - विचार : अप्रमत्त रहने से उद्यम और आराम अनायास एक साथ होता है।

- हर क्षण सब कर्म करते हुये समयातीत स्व-समय में जीना वही सामायिक है।

- स्वयं जैसे निर्बाध जीना चाहते हो, वैसे ही औरों को निर्बाध जीने दो कषाय न जगेंगे फलतः चेतना में कर्म का आश्रवण न होगा।

- जब हम स्वयं बदल कर अपना अभीष्ट संवाद और शांति पा लेते हैं तो जगत की हर सत्ता मूलतः हमें अपने साथ संवादी प्रतीत होने लगती है।

महावीर के नाम एवं अनेकांत

अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी एवं बुन्देली भाषा के वर्धमान चरितों का तुलनात्मक स्वाध्याय करते हुये ऐसे अनेकानेक प्रसंग प्राप्त हुये जिनमें महत्वपूर्ण अंतर है। उनमें से एक प्रसंग महावीर के प्रचलित नामों का है -

अपभ्रंश ग्रंथाकार का कथन है - स्वर्ण कलशों से अभिषेक कर इन्द्र ने उस नवजात शिशु का नाम (राशि एवं लग्न के अनुसार) वीर घोषित किया। राजा सिद्धार्थ ने दसवें दिन अपने पुत्रक नाम वर्धमान रखा।

संस्कृत ग्रन्थकार का विचार है - 'इन्द्रों ने लोक व्यवहार की प्रसिद्धि के लिये सार्थक और सारभूत दो नाम रखे। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश करने हेतु ये महावीर हैं और निरन्तर बढ़ने वाले गुणों के आश्रय से ये श्री वर्धमान हैं।'

बुन्देली कवि अलग राय रखते हैं -

दरशन कर सुरराज इम, सन्मति सार्थक नाम।
कर्म निकन्दन वीर हैं, वर्धमान गुणधाम।।
ये त्रय नाम प्रसिद्ध कर, धर उत्साह सुरेश।
ऐरावत आरूढ़ ह्वै, कंध लिये जिन ईश।।

उक्त विचार भिन्नता लिखने का तात्पर्य यह है कि जिनवाणी लेखन में भी तत्कालीन काल / साहित्य/ प्रशासन आदि का प्रभाव पड़ता है तथा एक ही रचना की अनेक प्रतियों तक में पर्याप्त अंतर आ जाता है। अतएव हमें धर्म संबंधी अपनी-अपनी मान्यताओं पर हठाग्रह न रखकर अनेकान्तिक दृष्टिकोण रखकर कट्टरता का त्याग करना चाहिये, जिससे जैन धर्म के सभी संप्रदाय एवं पंथ एकजुट होकर अपने धर्म के विश्वधर्म बनने की संभावनाओं को साकार कर सकें।

समवशरण संदेश देता है- 'जो पुरुष दूसरों को सद्बुद्धि देते हैं, तप और धर्मादि कार्यों में नित्य ही जो तत्व अतत्व और सत्य असत्य आदि अनेक बातों का विचार करते हैं, जो उत्तम बुधजन धर्मादि सार बातों को ग्रहण करते हैं और असार बातों को छोड़ देते हैं वे पुरुष मत्यावरण के मन्द होने से मेधावी और विद्वान होते हैं।


धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है ।

# हम सबके प्रभु

- ग.आ.शुभमति माताजी

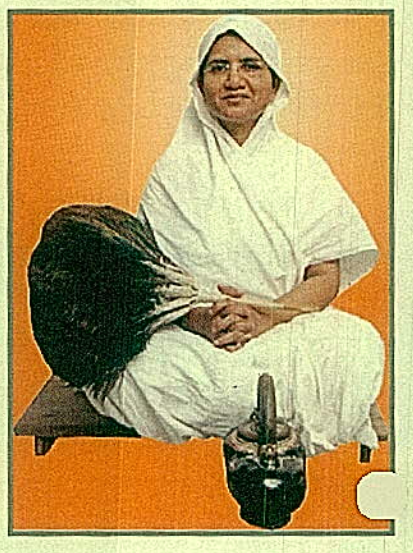

'गाय और सिंह को मिलकर पानी पीने दो ।
बिखरे मोती को मणियों में पिरोने दो ।।
महावीर की अहिंसा पुकारती है - तुम्हें ।
खुद जियो औरों को भी जीने दो ।।'

तीर्थंकर महावीर भगवान का उदय ऐसे समय में हुआ, जहाँ मानव दानव बनकर क्रूर हिंसा की क्रिया में लिप्त था। हिंसा का बोलबाला था। आज भी जहां यह स्थिति परिलक्षित हो रही है इसे करने के लिए उनका मार्ग ही श्रेयस्कर है। उनके जीवन से हम सब आज भी परिवर्तन ला सकते हैं।

चैत्र सुदी तेरस का दिन महान पवित्र दिन है जब चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ने जन्म लिया, जिससे अंधकार पर प्रकाश, अनाचार पर सदाचार, अज्ञान पर ज्ञान की ज्योतिर्मय सर्वोदय तीर्थ की किरणें प्रस्फुटित हुई। अंतिम तीर्थंकर महावीर ने धर्ममय जीवनधारा को बहाया। ईसा से लगभग २६०० वर्ष पूर्व पावन वसुंधरा विदेह देशस्थ कुंडलपुर में। राजा सिद्धार्थ एवं माँ त्रिशला देवी के यहाँ बालक वर्धमान ने जन्म लिया। जन्मते ही सारे विश्व में सुख शांति छा गयी, षट् ऋतुएं एक साथ फलने-फूलने लगी। उन्हें पाकर माता त्रिशला, पिता- सिद्धार्थ को अपार हर्ष हुआ और संतप्त प्राणियों को जीने की राह मिली। जो पूर्व में देवताओं द्वारा पूजित था, वही महावीर के जीव ने कुछ कम बहत्तर वर्ष आयु लेकर पुष्पोत्तर नामक विमान से च्युत होकर आषाढ़ शुक्ला षष्ठी के दिन कुण्डलपुर के नृप सिद्धार्थ क्षत्रिय कुलनाथ में सौ देवियों से सेवमान प्रियकारिणी त्रिशला देवी के गर्भमें रहकर नौ मास आठ दिन बाद चैत सुदी तेरस की रात में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लिया।

जन्मते ही नरक के जीवों को एक क्षण के लिए सुख-शांति प्राप्त हुई। सोलह कलाओं की तरह महावीर वृद्धि को प्राप्त हुए इसलिए इनका नाम वर्धमान रखा। क्रूर हिंसा का ताण्डव देख उन्हें संसार की असारता का भान हुआ। ३० वर्ष की भरी जवानी में वे गृह बंधन से व्यामोह तोड़कर आत्म साधना के पथ पर चल तपश्चरण करने लगे। माँ ने बहुत रोका, शादी का प्रस्ताव रखा पर वे मोह के बंधन में नहीं फँसे। वे स्वयं ज्ञान से परिपूर्ण। इसलिये अनुपम सुख, त्याग, संयम की साधना और तप की आराधना हेतु तत्पर थे। यह देह संसार के जन्म मरण बंधन तथा विषय-वासना, राग-द्वेष के निमित्त अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हैं, यह जान गृह-जंजाल से मुक्त हो वैरागी हुए।

माघ सुदी दसमी के दिन ऋजुकुला सरिता तट के ज्ञातृ उद्यान में अशोक वृक्ष के नीचे ओम कहते हुए पंचमुष्टि केशलोच कर दीक्षा धारण की। वे महान दिगम्बर मुनि हो गये। दिगम्बर अर्थात दिशा ही जिनका अम्बर (वस्त्र) है ऐसे वीतराग मुद्राधारी हो गये। बारह वर्ष तक घोर तप की साधना में ध्यानाग्नि में कर्म जलाते हुए संलग्न रहे। द्वादश वर्ष, पांच माह, पन्द्रह दिन छद्मस्थ अवस्था में रहकर घोर तपश्चरण के द्वारा उन्होंने रत्नत्रय से शुद्ध ऋजुकूला सरिता तटवर्ती शिलापट्ट पर छह उपवास के साथ आतापन योग करते हुए अपरान्ह काल में पाद प्रमाण छाया के रहते हुए वैशाख शुक्ला-दशमी के दिन क्षपक श्रेणी आरोहण कर चार घातिया कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान प्राप्त किया। वे अरहंत बन गये।

४२ वर्ष की अवस्था में केवलज्ञान की प्राप्ति हुई जिसमें त्रिलोक दर्पणवत् झलके। त्रैकालिक वस्तुएं झलकी। उनके समवशरण की बीस योजन लम्बाई चौड़ाई थी, बारह परिषदें थीं। भगवान महावीर ने अहिंसा व स्याद्वाद पर जोर देकर विश्व की गुत्थियों को सुलझया व समता का पाठ पढ़ाया। वे अहिंसा व स्याद्वाद के धनी थे, जिससे कठिन से कठिन समस्याएं सुलझ सकती है। भगवान ने समवशरण में २० हजार योजन ऊपर चतुर्मुख आभा के साथ दिव्य संदेश प्रदान किया। २९ वर्ष ५ माह, २० दिन तक ऋषि, मुनि, यति, अनगार, आर्यिकायें, श्रावक श्राविकाओं, देवों तिर्यंचों के लिए आत्मसाधक 'जिओ और जीने दो' का दिव्य संदेश दिया। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, स्याद्वाद आदि मानव जीवन के उत्थान के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुए।

आचार्य श्री १०८ सन्मति सागरजी महाराज की जय।

# श्री अनिल जमगे 'युवारत्न' पुरस्कार से सम्मानित

सांगली। दिनांक 3 अप्रैल, 2014 को भावे सभागार में दक्षिण भारत जैन सभा का 115वाँ वार्षिक पुरस्कार समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री डी.ए. पाटिल, महामंत्री श्री रावसाहेब पाटिल, श्री सागर चौगुले, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा आदि गणमान्य उपस्थित थे। यह संस्था भारत में बहुत बड़ी संस्था है। इसकी कुल 1800 के आसपास शाखाएं हैं और हजारों कार्यकर्ता पूरे भारत में कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री चक्रेश जैन, दिल्ली के कर-कमलों द्वारा सोलापुर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अनिल जमगे को 'युवारत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।


विनय आत्मा का गुण है ।

# आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज : श्रेष्ठ शिष्य, श्रेष्ठ गुरु

- कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'
बुरहानपुर (म.प्र.)

भारतीय वसुन्धरा सदैव संत चरणों का स्पर्श पाकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती रही है। आज भी ऐसे संत हैं जिनके ज्ञान एवं चारित्र के उजास से अनेक नर-नारी प्रभावित हैं, चमत्कृत हैं और उनके प्रति परम आस्था से जुड़े हुए हैं। जैन धर्म परम्परा के वर्तमान में सर्वोच्च आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ऐसे ही संत हैं, जिन्हें प.पू.आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज का शिष्य बनने का गौरव मिला और उन्हीं का सल्लेखना निर्यापक आचार्य बनने का सौभाग्य भी उन्हें मिला। इसी तरह आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने मुनिश्री समयसागरजी, मुनिश्री योगसागरजी, मुनिश्री क्षमासागरजी, मुनिपुंगव श्री सुधासागरजी, आर्यिका श्री गुरुमति जी, आर्यिका श्री दृढ़मति जी, आर्यिका श्री मृदुमति जी जैसे द्विशताधिक शिष्यों का श्रेष्ठ गुरु बनकर उन्हें अपने ही पद-चिह्नों का अनुगामी बनाया। इस तरह वे श्रेष्ठ शिष्य भी हैं और श्रेष्ठ गुरु भी। हम सब उनके इस शिष्य और गुरु दोनों रूपों के प्रति नतमस्तक हैं।

वर्तमान संतों में जैनाचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिये जाने का एक प्रमुख कारण और भी है और वह यह है कि वे पुरुषार्थी हैं, मन-वाणी और कर्म की एकता से संपृक्त हैं। उनमें विचारशीलता है, विचारों को कलम में पिरोकर कागज पर उतारने की कला उन्हें आती है। वे सहज कवि भी हैं और सकल कवि भी। इसीलिए वे स्फुट काव्य से लेकर महाकाव्य तक रचते हैं, समीक्षकों, आलोचकों, पाठकों के विचारों से रूबरू भी होते हैं। वे अपने प्रति सजग हैं और दूसरों के प्रति सहिष्णु भी। उनकी आस्था उन्हें साधना पथ की ओर बढ़ाती है। उनकी मान्यता है कि -

**आस्था के विषय को**
**आत्मसात् करना हो**
**उसे अनुभूत करना हो**
**तो**
**साधना के साँचे में**
**स्वयं को ढालना होगा सहर्ष। (मूकमाटी, पृ.10)**

यह आस्था क्यों जरूरी है? इस विषय में आचार्यश्री विद्यासागरजी की मान्यता है कि -

**यह बात सही है कि,**
**आस्था के बिना रास्ता नहीं**
**मूल के बिना चूल नहीं,**
**परन्तु**
**मूल में कभी**
**फूल खिले हैं?**
**फलों का दल वह**
**दोलायित होता है**
**चूल पर ही आखिर! (मूकमाटी, पृ.10)**

उन्होंने अपने एक 'हायकू' में इस भाव को लिखा है कि-मूल की व्याख्या इस तरह नहीं होना चाहिए जैसे कि बरगद की जड़ें। कहने का तात्पर्य है कि हम जड़ों को जानें, जड़ों को सींचें, जड़ों की रक्षा करें क्योंकि जड़ के बिना वृक्ष की स्थिरता संभव नहीं। इस तरह की भावना वाले आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज द्वारा विरचित साहित्य इस प्रकार है-

**संस्कृत शतकम् -** श्रमण शतकम्, भावना शतकम्, परिषह शतकम्, सुनीति शतकम्, चैतन्य चन्द्रोदय (शतकम्)।

**हिन्दी काव्य -** मूकमाटी (महाकाव्य), नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत, लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता?, चेतना के गहराव में।

**हिन्दी शतक -** निजानुभव शतक, पूर्णोदय शतक, मुक्तक काव्य शतक, दोहा थुदि शतक।

**स्तुति -** शांतिसागर स्तुति, वीरसागर स्तुति, शिवसागर स्तुति, ज्ञानसागर स्तुति, शारदा स्तुति (हिन्दी संस्कृत), श्भ ऐंघ्ऊ-श्भ एंध्ह

**प्रवचन संग्रह -** गुरुवाणी, प्रवचन-पारिजात, प्रवचन-प्रमेय आदि अनेक प्रवचन संग्रह प्रकाशित।

**पद्यानुवाद -**

जैन गीता (समण सुत्तम्), कुन्दकुन्द का कुन्दन (समयसार), निजामृतपान (कलशानुवाद), द्रव्य संग्रह, अष्ट पाहुड़, नियमसार, द्वादश अनुप्रेक्षा, समन्तभद्र की भद्रता (स्वयंभू स्तोत्र), गुणोदय (आत्मानुशासन), रयण मंजूषा (रत्नकरण्डक श्रावकाचार), आत्म मीमांसा (देवागम स्तोत्र), इष्टोपदेश, कल्याण मंदिर स्तोत्र, समाधि सुधा शतकम्, योगसार, एकीभाव स्तोत्र, नंदीश्वर भक्ति, गोमटेश अष्टक आदि श्रम 'चैतन्य चन्द्रोदय' (शतक) का प्रणयन किया है।

इस साहित्य को पढ़कर ज्ञात होता है कि उत्कृष्ट साधुता के साथ-साथ जिनमें साहित्य सर्जना के प्रति गहरी रुचि एवं सहज भावाभिव्यक्ति की क्षमता विद्यमान है; ऐसे अनिवार्य भारतीय संत का नाम है आचार्यश्री विद्यासागर। उन्होंने अपनी चर्या और चिंतन में जो कुछ पाया है वह परम्परा से पुष्ट भी है आधुनिकता से छिन्न-भिन्न भी नहीं है। वे विरल हैं किन्तु समाज, संस्कृति, राष्ट्र और विश्व से अविरल हैं। उनमें अभिनव कला सर्जक, प्रतिभावान कवि, परखीली दृष्टि संयुक्त चेतस् को जानने की प्रज्ञा विद्यमान है। वे समाज से असंपृक्त रहकर समाज को दिशा देना चाहते हैं और बदले में यदि कुछ चाहते हैं


सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है ।

तो वह है समाज सुधार। प्रकृति जीवी, दिगम्बर वेशी, साधनाशील, प्रिय कर्मरत मन वाले वे मूकमाटी से भी बुलवाकर प्रकृति के अन्तस्तल में छिपी अपार संभावनाओं और संवेदनाओं का दिग्दर्शन कराते हैं। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों महनीय है, अनुकरणीय है।

संत सहज होते हैं और उनका जीवन सहजता का प्रतिबिम्ब। वे न तो कानों सुनी कहते हैं न आँखों देखी, बल्कि जिसे भोगा है, अनुभव किया है तथा शास्त्र और तर्क की कसौटी पर कसकर देखा है, उसे ही कहते हैं। इसीलिए उनके विचारों में गंगा जैसी ही नहीं, वरन् गंगोत्री जैसी पावनता होती है।

**सागर-सी गहराईयाँ, चिन्तन है अभिराम।**
**त्याग तपस्या प्रकट है, चहुँदिशि में शुभनाम।।**
**प्रवचन पारंगत प्रभो, जन-मन के विश्राम।**
**गुरुवर विद्या धाम को, शत-शत बार प्रणाम।।**

नाम, दाम और चाम के प्रलोभन से परे अध्यात्म के परम रसिक श्रमणोत्तम आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज नाम से'यथानाम तथा गुण' हैं, काम से 'सत्यकाम' हैं, काया से जिनवर-सदृश और वाणी से सत्यवादी हैं। उनके वचन 'प्रवचन' और साधना अनुकरणीय है। उनके द्वारा रचित/कथित साहित्य 'साहित्य' के हितकारी भावों से समन्वित है। वे जो कहते हैं वह उनका अनुभव है, उनकी भावना है इसीलिये वे प्राणीमात्र के शुभचिंतक एवं उद्धार के प्रेरक हैं। महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य के संबंध में कहा था कि - 'सहित शब्द से साहित्य की उत्पत्ति हुई है अतएव धातुगत अर्थ करने पर साहित्य शब्द में मिलन का एक भाव दृष्टिगोचर होता है। वह केवल भाव का भाव के साथ, भाषा का भाषा के साथ, ग्रंथ का ग्रंथ के साथ मिलन है, यही नहीं वरन् यह बतलाता है कि मनुष्य के साथ मनुष्य का अतीत के साथ निकट का मिलन कैसे होता है?' आचार्य श्री विद्यासागरजी तो प्राणीमात्र के हितैषी हैं अतः उनके कृतित्व में भी प्राणी-हित सर्वत्र परिलक्षित होता है। डॉ. शांताकुमारी के अनुसार- 'प्रतिभावान तपस्वी कवि आचार्यश्री विद्यासागरजी ने आध्यात्मिक जीवन की अजस्र-धारा का निर्बाध प्रहारकर ऐसा साहित्य प्रस्तुत किया है, जो भारतीय/हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि बन गया है। उनने प्राचीनता-अर्वाचीनता, आध्यात्मिकता-आधिभौतिकता, परम्परागत दार्शनिक चिन्तन की गहराई के साथ ही काल मार्क्स के प्रत्यय शास्त्र की गंभीरता का ऐसा वैचारिक सामंजस्य उपस्थापित किया है, जिसके कारण सन्त होकर भी वे इस सदी के नये मानव के प्रतिनिधि बन गये हैं।' आचार्यश्री विशालता और विराटता के दर्शन में विश्वास रखते हैं। यह उचित भी है क्योंकि जिसे आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा करनी हो वह तुच्छता में विश्वास कैसे रख सकता है? वे लिखते हैं कि -

**कूप बना तालाब ना, नहीं कूप मण्डूक।**
**बरसाती मेंढ़क नहीं, बरसो घन बन मूक।।**

ऐसे महनीय एवं दुर्लभ संत को पाकर हम सब अपने आप में, अपनी दिगम्बर संस्कृति में गौरव का अनुभव करते हैं और आचार्यश्री के चिरायु होने की कामना करते हैं।

# लोकसभा चुनाव और जैन

- डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्.
श्रवणबेलगोला

चुनाव अयोग की ओर से आगामी लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया चल रही है। भारत में प्रत्येक धर्म और जाति के लोग अपने हितों को ध्यान में रखकर वोट देते हैं। जैनों में प्रायः राजनैतिक रूप से जागरूकता नहीं है, अतः कोई-कोई राजनैतिक पार्टी उन्हें विशेष महत्व नहीं देती है। हमारी संख्या भी अत्यल्प है। ऐसी स्थिति में हमें अपने हितों को सर्वोपरि रूप से महत्व देना चाहिए। हमें उन पार्टियों को महत्व नहीं देना चाहिए, जो साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर हिंसा को प्रोत्साहित करती हैं। हमें अपने राजनैतिक स्थिति भी मजबूत करना चाहिए तथा मताधिकार का विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए। जैनों को विभिन्न राजनैतिक दलों और उम्मीदवारों के समक्ष स्पष्ट रूप आश्वासन माँगना चाहिए कि -

१. वे अल्पसंख्यक जैन समाज के अस्तित्व एवं प्राचीन सम्पदा के संरक्षण की व्यवस्था करेंगे।
२. बद्रीनाथ, गिरनार, ऋषभदेव-केसरियाजी, खण्डगिरि-उदयगिरि, राजगृही, पालीताणा आदि तीर्थक्षेत्रों पर जैन समाज की भावनाओं का सम्मान करते हुए उन्हें सुरक्षा प्रदान करेंगे।
३. नये बूचड़खने खोलने तथा शराब की नयी दुकानें खोलने पर प्रतिबंध लगायेंगे।
४. 'पिंक रेवोल्यूशन' (गोमांस क्रांति) की योजना को रद्द करेंगे। इसके अंतर्गत मांस के रंग के आधार पर पशु काटे जाते हैं और उनका मांस विक्रय किया जाता है, निर्यात किया जाता है।
५. 'मिड डे मील' में अंडा-मांसादि खिलाने की अनुमति नहीं देंगे। जैनों के विभिन्न पर्वों पर मांस की दुकानें एवं बूचड़खने बंद करवायेंगे।
६. जैनधर्म की उत्पत्ति एवं तीर्थंकर परम्परा विषयक इतिहास की पुस्तकों में जो अनर्गल लेखन है उसे हटवाकर सही लेखन करवायेंगे।
७. सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिगम्बर जैन मुनियों के निर्बाध पद-विहार को सुनिश्चित करेंगे। उनकी सुरक्षा करेंगे।
८. जैनधर्म के प्राचीन ग्रन्थों तथा उनमें प्रतिपादित विचारों का सम्मान करेंगे।
९. तीर्थंकर ऋषभदेव द्वारा प्रतिपादित जीवन जीने के लिए आवश्यक छः कलाओं - असि, मसि, कृषि, शिल्प, विद्या और वाणिज्य को बढ़ावा देंगे तथा तीर्थंकर महावीर के स्वामी के द्वारा प्रतिपादित अहिंसा एवं अनेकांत सिद्धांत के द्वारा परस्पर समन्वय की नीति को बढ़ावा देंगे तथा बैर-विरोध का शमन करेंगे।

लोकसभा की लगभग ४५ सीटों पर जैन मतदाताओं की अच्छी स्थिति है। यदि वे संगठित होकर मतदान करते हैं तो लोकतंत्र को मजबूत करेंगे और जैनधर्म एवं समाज के हित में निर्णय लेने के लिए जनप्रतिनिधियों को तैयार कर सकेंगे। अतः मेरा समस्त जैन समाज के मतदाताओं से आग्रह है कि वे अनिवार्य रूप से मतदान करें।

# संस्कार, संस्कृति और संन्यास

- विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (गुना)

अच्छे संस्कारों से संस्कृति की रक्षा होती है। अगर हम संस्कारवान बनकर संस्कृति की रक्षा करते हैं तो फिर निश्चित ही हम धर्म परायण बनकर सन्यास की ओर बढ़ेंगे। संस्कार, संस्कृति और सन्यास की ओर से हमारी विमुखता गंभीर चिंतन का विषय है। भौतिकता की चकाचौंध में व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति में रच पच गया है, प्राचीन भारतीय संस्कृति से विमुख हो गया है।

बचपन से बालक को हम अच्छे संस्कार देंगे तो वह महान बनेगा, अगर संस्कार बुरे मिले तो पथभ्रष्ट हो जायेगा। प्रातःकाल हम बालक को हाथ पकड़कर मंदिर भगवान के दर्शन करने ले जायेंगे, तथा मंदिर के भंडार में कुछ रुपये अपनी पॉकिट से निकालकर बेटे के हाथ से डालने देंगे तो वह जीवन भर भगवान के दर्शन करने सब काम छोड़कर जायेगा तथा दान पेटी में कुछ रुपये डालने की दान की आदत ही आयेगी। हमारे घर में तुलसी का पौध लगा है उसे प्रतिदिन हम पवित्र जल डालकर जीवित रखते हैं। इसके विपरीत अगर हम तुलसी के पौधे को पानी के स्थान पर शराब से सींचेंगे तो वह पौधा सूख जायेगा। माता-पिता बालक को बचपन में जो कहते हैं बालक उसी का अनुसरण करता है। सत्य बोलना एवं झूठा बोलना बालक को हम ही सिखाते हैं। एक बार पिताजी ने बेटे से कहा बेटा मेरे मित्र आयेंगे उनसे कह देना पिताजी घर पर नहीं हैं। बेटे ने मित्र के आने पर कह दिया पिताजी घर पर नहीं हैं। मित्र ने पूछा बेटा पिताजी घर कब आयेंगे? इस प्रश्न का उत्तर पिता ने बेटे को नहीं बताया था। बेटे ने कहा रुको इस प्रश्न का उत्तर अंदर पिताजी से पूछकर आता हूँ। इस प्रकार हम अपनी संतान को झूट बोलना सिखा रहे हैं। बालक को बचपन से दूध पीने की आदत डालेंगे तो वह दूध पियेगा और हम उसे अपने साथ बैठाकर बीड़ी, सिगरेट एवं शराब पिलायेंगे तो वह जीवनभर इन गंदी आदतों में पड़कर जीवन बर्बाद करेगा।

संस्कारवान बनकर संस्कृति की रक्षा करना एवं सन्यास की ओर बढ़ने के लिये हमें भगवान श्रीमान, सीता एवं लक्ष्मण के चरित्र से प्रेरणा लेना चाहिए। राजा दशरथ द्वारा चौदह वर्ष का वनवास देने पर श्रीराम ने तत्काल वन गमन का निर्णय लिया। पतिव्रता पत्नी का दायित्व निभाते हुए सीताजी ने भी पति के साथ वनवास एवं भाई लक्ष्मण ने भी भाई के साथ वनवास का संकल्प लिया। दिगम्बर जैनाचार्य विद्यासागरजी के प्रिय शिष्य मुनि प्रमाण सागर जी ने कलकत्ता में २३ जुलाई, २०१३ को प्रवचन देते हुए कहा। उन्होंने कुछ महिलाओं से पूछा आज आपके पति चौदह वर्ष के वनवास को जायेंगे तो आप उनका साथ देने वनवास जायेंगी? चार महिलाओं ने कहा हम अपने पति के साथ वनवास पर चौदह वर्ष क्या जीवन भर के लिए चले जायेंगे। उन महिलाओं का तर्क था वनवास जाना हम पसंद करेंगे परिवार में तीन-तीन सासों के बीच रहने की अपेक्षा पति के साथ वनवास सहन कर लेंगे। मुनिश्री ने आगे कहा वर्तमान परिवेश में पत्नी से कहा जाये कि वनवास पर चलना है तो वह तत्काल विवाह विच्छेद पत्रों पर हस्ताक्षर करने पति से कह देगी तथा जीवन निर्वाह भत्ता की मांग का दावा न्यायालय में दायर कर देगी।

भगवान महावीर सत्य अहिंसा के प्रतीक हैं, भगवान श्रीराम मर्यादा के प्रतीक हैं, स्वामी विवेकानंद आध्यात्मिकता के प्रतीक हैं, महात्मा गांधी शांति के प्रतीक हैं। सत्य अहिंसा, मर्यादा आध्यात्मिकता एवं शांति भारतीय संस्कृति के अमर पहलू हैं।

तीर्थ उद्धारक संत मुनि सुधासागरजी ने गुना में दिनांक २३ जुलाई, २०१३ को प्रवचन करते हुए संस्कार एवं प्राचीन संस्कृति का स्मरण कराया। आपने कहा एक जनवरी को नववर्ष ईसाई धर्म का है। एक अप्रैल को नया वर्ष मनाना गलत है यह तो मूर्ख दिवस है। आपने कहा कि जैन धर्म के अनुसार श्रावण कृष्णा एकम नये वर्ष की शुरुआत का दिवस है। चतुर्थ काल की समाप्ति के बाद पंचम काल का शुभारम्भ इसी दिन हुआ था। आपने आह्वान किया इसी दिन अपने मित्रों को नववर्ष की बधाई की परंपरा प्रारम्भ करें।

सुधासागरजी ने कहा सारे विश्व की पाश्चात्य संस्कृति खारे समुद्र की भाँति है और भारत की संस्कृति मीठे गंगाजल के समान है। आपने आह्वान किया यदि हमने इस मीठे जल की गंगा रूपी संस्कृति को नहीं बचाया तो यह समुद्र के खारे जल में विलय हो जायेगी।

अच्छे संस्कारों से हम संस्कृति की रक्षा करेंगे। मुनिराज ने कहा हमारे देश को गर्व से भारत कहे इंडिया कहना बंद करें। भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति की रक्षा के लिये हजारों अमर शहीदों ने प्राणों की आहुति दी। वर्षों तक जेल में रहकर यातनायें सही। लेकिन भारतवासी अब विदेशी अंग्रेजों द्वारा स्थापित नववर्ष मनाकर हमारे शहीदों का अपमान कर रहे हैं।

सुसंस्कारों से संस्कृति की रक्षा होगी एवं हम सन्यास की ओर बढ़ेंगे। भगवान महावीर, भगवान श्रीराम, भगवान बुद्ध, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, आदि महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेना चाहिए संस्कारों से संस्कृति की रक्षा की और संन्यास ग्रहण की।

---

### दिगम्बर जैन शाकाहार परिषद, जबलपुर

## श्री सुरेश चन्द्र जैन शाकाहार रत्न को दो बार अहिंसा इंटरनेशनल अवार्ड से अलंकृत किया गया

### पुरस्कृत राशि रु. 21,000/- गरीबों को स्वास्थ्य सेवा हेतु समर्पित कर दी

राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा एवं कुन्द-कुन्द भारती संस्था द्वारा प्रथम बार 1998 में एवं द्वितीय बार 2014 में अहिंसा इंटरनेशनल अवार्ड से नवाजा गया है। राष्ट्र संत श्वेत पिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंदजी मुनिराज, एकाचार्य श्री 108 प्रज्ञा सागरजी मुनिराज एवं राष्ट्र के प्रमुख समाज श्रेष्ठीगण तथा माननीय नेताओं की उपस्थिति में कुन्दकुन्द भारती संस्था, दिल्ली में दिया गया। श्री चक्रेश जैन, पूर्व महामंत्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा बधाई।



क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

# मध्यांचल, पूर्वांचल, राजस्थान एवं गुजरात अंचलीय समितियों के अध्यक्षों के चुनाव सम्पन्न

**दिनांक 22 दिसम्बर, 2013 को दिल्ली में सम्पन्न हुई तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद के निर्णयानुसार दिनांक 9 फरवरी, 2014 को तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश एवं पांडिचेरी अंचल के एवं दिनांक 2 मार्च, 2014 को कर्नाटक अंचलीय समितियों के अध्यक्षों के चुनाव सम्पन्न हुए जिसकी रिपोर्ट जैन तीर्थ वंदना के गतांक में प्रकाशित हुई है। उसके पश्चात मध्यांचल, पूर्वांचल, राजस्थान एवं गुजरात अंचलीय समितियों के अध्यक्षों के चुनाव सम्पन्न हुए हैं जिसकी रिपोर्ट निम्न प्रकार है -**

## मध्यांचल समिति के अध्यक्ष का चुनाव, श्री विमल सोगानी, इंदौर अध्यक्ष निर्वाचित

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रविवार दिनांक 23 मार्च, 2014 को दोपहर 1.00 बजे से मध्यांचल समिति की सर्वसाधारण सभा का अधिवेशन श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चूलगिरि बावनगजाजी क्षेत्र बड़वानी, जिला- खरगोन (पूर्व निमाड़) म.प्र. के निर्माणाधीन भोजनशाला कक्ष में प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सवाई सिंघई श्री सुधीर जैन, कटनी' राष्ट्रीय मंत्री श्री शरद जैन, भोपाल; तीर्थक्षेत्र कमेटी के पर्यवेक्षक श्री संजय जैन 'मैक्स', संगठन मंत्री श्री पंकज जैन सुपारी, समाज श्रेष्ठी श्री भरत मोदी, बावनगजाजी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन के अतिरिक्त अंचल के पदाधिकारी मंचासीन थे।

सर्वप्रथम भगवान आदिनाथ के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन विधि मंचासीन श्रेष्ठियों ने किया।

अध्यक्ष पद की उम्मीदवारी हेतु श्री विमल सोगानी, इंदौर के नाम का प्रस्ताव श्री भरत मोदी, इंदौर ने रखा जिसकी अनुमोदना श्री पंकज जैन सुपारी-भोपाल, श्री राजकुमार जैन, बावनगजा एवं श्री मनोज पाटोदी, इंदौर ने किया। अन्य कोई उम्मीदवार नहीं होने से चुनाव अधिकारी द्वारा श्री विमल सोगानी, इंदौर को आगामी पांच वर्ष के कार्यकाल के लिए (2014-19) भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मध्यांचल का अध्यक्ष घोषित किया गया। तदनुरूप श्री विमल सोगानी को निर्वाचन प्रमाण-पत्र जारी किया गया।

सभासदों ने श्री विमल सोगानी का कर-तल ध्वनि से स्वागत किया।

**- सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल, इंदौर**
**चुनाव अधिकारी**

## पूर्वांचल के अध्यक्ष का चुनाव, श्री कन्हैयालाल जी सेठी, औरंगाबाद (बिहार) अध्यक्ष निर्वाचित

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रविवार दिनांक 23 मार्च, 2014 को पूर्वांचल समिति की सर्वसाधारण सभा का अधिवेशन श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी उपरैली कोठी, मधुबन (शिखरजी), जिला- गिरिडीह (झारखण्ड) में सम्पन्न हुआ। चुनाव अधिकारी श्री महावीर प्रसाद सेठी ने बताया कि उनके पास पूर्वांचल के अध्यक्ष पद के लिए केवल एक नामांकन पत्र श्री कन्हैयालाल जैन (सेठी), औरंगाबाद (बिहार) का आया है जो जाँच करने पर सही पाया गया है। उन्होंने सभा से यह अनुरोध किया कि यदि किसी सदस्य को पूर्वांचल के अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन पत्र देना है तो वे दे सकते हैं। 5 मिनट तक प्रतीक्षा के बाद भी अन्य किसी का नामांकन नहीं प्राप्त होने से श्री कन्हैयालाल जी जैन सेठी को आगामी पांच वर्षों के लिए सर्वसम्मति से पूर्वांचल का अध्यक्ष घोषित किया गया।

**महावीर प्रसाद जैन सेठी**
**मधुबन, 23-3-2014**
निर्वाचन अधिकारी


वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

# राजस्थान अंचल के अध्यक्ष का चुनाव
# श्री राजेन्द्र के. गोधा, जयपुर अध्यक्ष निर्वाचित

जयपुर। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी (राजस्थान अंचल) के चुनाव आगरा रोड, संघी जी नसियां खानियां में सम्पन्न हुआ। इस चुनाव में आगामी पांच वर्ष के लिए समाज भूषण श्री राजेन्द्र के. गोधा को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया।

श्री गोधाजी ने अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। चुनाव पर्यवेक्षक के रूप मे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक श्री नरेश कुमार जी सेठी, राजस्थान अंचल के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक जैन (नेता), श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा के मानद मंत्री श्री ज्ञानचन्द झाँझरी, श्री सुजानमल भू.जैन अध्यक्ष श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सरवाड़ (अजमेर) सहित समाज के अन्य प्रतिनिधियों ने गोधा जी को राजस्थान अंचल का निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई दी।

# श्री अजीतभाई मीठालाल मेहता, अहमदाबाद
# गुजरात अंचल के अध्यक्ष निर्वाचित

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गुजरात अंचल की सर्वसाधारण सभा का अधिवेशन रविवार दिनांक 6 अप्रैल 2014 को 2.30 बजे से कटारिया ऑटोमोबाइल्स, खोखरा ब्रिज के पास कांकरिया अहमदाबाद में संपन्न हुआ, जिसमें श्री अजितभाई मीठालाल मेहता बहुमत से विजयी घोषित किये गये।

**गौतमभाई एस. शाह**
**चुनाव अधिकारी**

# जैन अल्पसंख्यक हैं

— डॉ. रमेशचन्द जैन, डी.लिट्., श्रवणबेलगोला,

दिनांक १० मार्च, २०१४ के 'विजय कर्नाटक' पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि वाराणसी में एक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की एक सभा में केन्द्र सरकार द्वारा जैनों को अल्प संख्यक घोषित किए जाने पर घोर विरोध किया गया तथा कहा गया कि जैनधर्म हिन्दूधर्म का एक भाग है। आर.एस.एस. के नेताओं को यह ज्ञान होना चाहिए कि वीर सावरकर ने कहा था कि हिन्दू कोई पृथक धर्म नहीं है। धर्म तो वैदिक, जैन, बौद्ध इत्यादि हैं। इस दृष्टि से जिनकी जन्मभूमि और पितृभूमि भारतवर्ष है, वे सभी हिन्दू हैं। दुर्भाग्य से वीर सावरकर के इस समाधान को न मानकर आज हिन्दू धर्म से तात्पर्य वैदिक धर्म ही माना जाता है अर्थात् वैदिक धर्म के लिए हिन्दू धर्म कहना रूढ़ हो गया है।

हिन्दू शब्द बड़ा भ्रामक है। सिन्धु देश के निवासियों को कुछ देशों में हिन्दु या हिन्दू कहा गया क्योंकि वे स् के स्थान पर ह का प्रयोग करते थे। इस देश का मुसलमान भी जब अरब देश वगैरह में जाता है तो उसे हिन्दू मुसलमान कहा जाता है। यहाँ के निवासी जब चीन, जापान आदि जाते हैं तो उन्हें हिन्दु कहा जाता है। वैदिक धर्म से पृथक् होने के कारण जैनधर्म कभी हिन्दू धर्म के नाम से उच्चरित नहीं हुआ; क्योंकि हमारे देव, शास्त्र और गुरु तथाकथित हिन्दुओं से पृथक् हैं तथा हम वेद की प्रामाणिकता को नहीं मानते हैं। पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने ग्रन्थ 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में कहा था कि जैन इस देश के मूल निवासी हैं, वे हिन्दू नहीं हैं जबकि वे शतप्रतिशत भारतीय हैं। आर.एस.एस. सभी भारतीयों को यदि हिन्दू मानता है तो वह सिक्खों और बौद्धों को अल्पसंख्यक कैसे स्वीकार करता है? पंजाब सरकार आर्य समाज को अल्पसंख्यक स्वीकार करती है। एक ही देश के कुछ रीति-रिवाजों में साम्य होने के कारण सभी एक ही धर्म के अनुयायी नहीं हो जाते हैं। हजारों वर्षों से एक साथ रहने के कारण वैदिक धर्म और जैन धर्म का एक-दूसरे पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा है, किन्तु इससे उनका धर्म नहीं बदला है। जैन सदैव इस देश के निवासियों के साथ भ्रातृभाव से रहते आए हैं। उनकी जनसंख्या सरकारी जनगणना के अनुसार एक प्रतिशत से भी कम है, उन्हें बहुत पहले ही अल्पसंख्यक घोषित होना चाहिए था। हमारा संविधान भी इसकी अनुमति देता है। इतनी देरी से उन्हें न्याय मिला है तो आर.एस.एस. क्यों विरोध कर रहा है? जैन अल्पसंख्यक होने से हिन्दू धर्म विभाजित नहीं होता है। हमारा हिन्दू तथा अन्य धर्मानुयायियों के साथ सदा सौमनस्य रहा है। जैनों के अल्पसंख्यक स्वरूप से किसी भी अन्य मतावलम्बी को कोई खतरा नहीं है।



बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है।

# चांदखेड़ी में भगवान आदिनाथ का जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

- महावीर प्रसाद जैन, कोटा
महामंत्री- श्री आदिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र, चांदखेड़ी

कोटा। श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चांदखेड़ में ऋषभ जयंती मेले पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम श्रद्धा व प्रसन्नता के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 24 मार्च, 2014 सोमवार को चांदखेड़ी मेले के अवसर पर ब्र. प्रदीन भैया सुयश, अशोक नगर के सान्निध्य में ध्वजारोहण का कार्यक्रम श्रेष्ठी मंगतूराम जी ताराचंद जी गोयल द्वारा किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुये ब्र. गीता दीदी ने कहा कि भगवान आदिनाथ का जन्म उस काल में अयोध्या में हुआ था तो 6 माह पूर्व से ही हर्ष का वातावरण बन गया था। इन्द्र एवं उसके यक्षों ने अयोध्या नगरी को सुन्दरता से सजाया था एवं कुबेर द्वारा करोड़ों रत्नों की वर्षा प्रतिदिन की गयी थी। भगवान आदिनाथ ने सन्मार्ग दिखाकर सभी नागरिकों के लिये जीने का मार्ग प्रशस्त किया। ध्वजारोहण के समय अतिशय क्षेत्र, चांदखेड़ी के अध्यक्ष श्री गुलाबचन्द चूना वाला, कार्याध्यक्ष इंजी. अजय बाकलीवाल, महामंत्री श्री महावीर प्रसाद जैन, मेला संयोजक श्री महेन्द्र कांसल, श्री भगवान स्वरूप जैन, श्री लाभचन्द जैन, एडवोकेट श्री गोपाल लाल जैन के अतिरिक्त श्रेष्ठी श्री कैलाशचन्द सर्राफ, श्री मोहनलाल जैन खेड़ा वाले, श्री अनिल जैन (गुना) एवं श्री विजय कुमार पत्रकार, राघोगढ़ भी उपस्थित थे।

चांदखेड़ी के महामंत्री श्री महावीर प्रसाद जैन ने बताया कि सोमवार को आयोजित सांस्कृतिक संध्या एवं कवि सम्मेलन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सवाई सिंघई श्री सुधीर जैन ने किया। महिला मंडल खानपुरा द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत भावभीनी एवं मनोहारी प्रस्तुतियां दी गयी। राष्ट्रीय एवं ख्याति प्राप्त कवि चन्द्र सेन जैन के संयोजन में धार्मिक कवि सम्मेलन का आयोजन भी हुआ, जिसमें देर रात तक उपस्थित महानुभावों ने धार्मिक कविताओं का रसास्वादन किया।

कार्याध्यक्ष इंजी. अजय बाकलीवाल एवं सह-संयोजक श्री भगवान स्वरूप जैन के अनुसार चैत्र वदी नवमी मंगलवार 25 मार्च को श्री आदिनाथ भगवान का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा की गयी। जिसके पुण्यार्जक श्री अनिल राखी के चेयरमैन श्रेष्ठी श्री बच्चू सिंह जी अलवर रहे। मंदिर परिसर से भगवान आदिनाथ को सुसज्जित रथ में विराजमान कर विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ की गयी। इस अवसर पर खानपुर कस्बे को स्थानीय निवासियों द्वारा बंधनवार, रंगोली एवं स्वागत द्वार आदि लगाकर सुन्दरता के साथ सजाया गया। रास्ते में अनेक जगह शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालुओं एवं महानुभावों के लिये अनेक जगह पर पंचमेवा, संतरा, अंगूर, मीठे शरबत आदि के स्टाल लगाकर वितरण किया गया। शोभायात्रा में हाथी पर विराजमान इन्द्र अश्वारोही धर्मपताका लेकर आगे-आगे छात्र एवं छात्राएं चल रहे थे। शोभायात्रा का मुख्य आकर्षण महिलाओं का चांदखेड़ी दिव्यघोष बैण्ड, महिला मंडल सारोला का महिला बैण्ड, जैन युवक मण्डल रूठियाई का बैण्ड एवं सिहोरा का बैण्ड मधुर ध्वनि गुंजित करते हुये चल रहा था। शोभायात्रा में श्रीजी के रथ के साथ-साथ पालकी में जिनवाणी भी विराजमान थी। इस अवसर पर शोभायात्रा की समाप्ति पर श्रीजी का जलाभिषेक किया गया।

इस ऋषभ जयंती मेले के अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने कहा कि चांदखेड़ी प्र[illegible] कार्यकारिणी की विभिन्न व्यवस्थाएं प्रशंसनीय हैं। इस दो दिवसीय मेले को ऊँचाईयां प्रदान की है। इसमें देशभर के कई प्रांतों के हजारों धर्मावलम्बियों ने पधारकर सातिशय पुण्यार्जन किया है। अपने उद्बोधन में यह भी बताया कि देश के सिद्धक्षेत्रों एवं अन्य अतिशय क्षेत्रों की यात्रा पर जा रहा हूँ तथा हमारी कोशिश है कि इन तीर्थों पर जो भी असुविधाएं हैं उन्हें दूर किया जाए ताकि तीर्थों को संरक्षण प्राप्त हो सके। चांदखेड़ी सहित जिन तीर्थक्षेत्रों में सीसीटीवी नहीं है उनकी व्यवस्था तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा शीघ्र करा दी जायेगी। अंत में मेले की प्रशंसा करते हुये कहा कि महिला संगठनों ने अपने विभिन्न आकर्षक परिधानों में बैण्ड बजाते हुये शोभायात्रा को आकर्षण प्रदान किया। मैं प्रबंध कार्यकारिणी को, विभिन्न महिला संगठनों, युवा संगठनों को मेले को भव्यता प्रदान करने के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ एवं अभिनंदन करता हूँ।

अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी के महामंत्री श्री महावीर प्रसाद जैन ने बत[illegible] कि कार्यक्रम में उपस्थित श्रेष्ठी श्री बच्चू सिंह जी अलवर, पूर्व निःशक्तजन आयुक्त श्री खिल्लीमल जैन, तीर्थक्षेत्र रक्षा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं कार्यकारिणी के द्वारा चांदखेड़ी कमेटी के वरिष्ठ सदस्य जिनकी आयु 90 वर्ष से भी अधिक है तथा जो 20 से भी अधिक वर्षों से प्रबंध कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में क्षेत्र में सेवारत हैं के अंतर्गत श्री नेमीचन्द जैन (92), रामगंजमंडी; श्री बाबूलाल जैन (94) गुना एवं श्री गुलाबचन्द जैन (92) रुठियाई का शॉल, पगड़ी एवं स्मृति चिह्न देकर अभिनंदन किया गया। मेले में हाडौती क्षेत्र के अतिरिक्त मध्यप्रदेश, गुना, राघोगढ़, रुठियाई के साथ-साथ जयपुर, अलवर, उदयपुर, नागपुर, दिल्ली, पूना आदि सुदूर क्षेत्रों के हजारों धर्मानुरागी महानुभावों ने सपरिवार भाग लेकर पुण्यार्जन किया।


जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं।

## चांदखेड़ी, भगवान आदिनाथ का जन्मोत्सव दृश्य

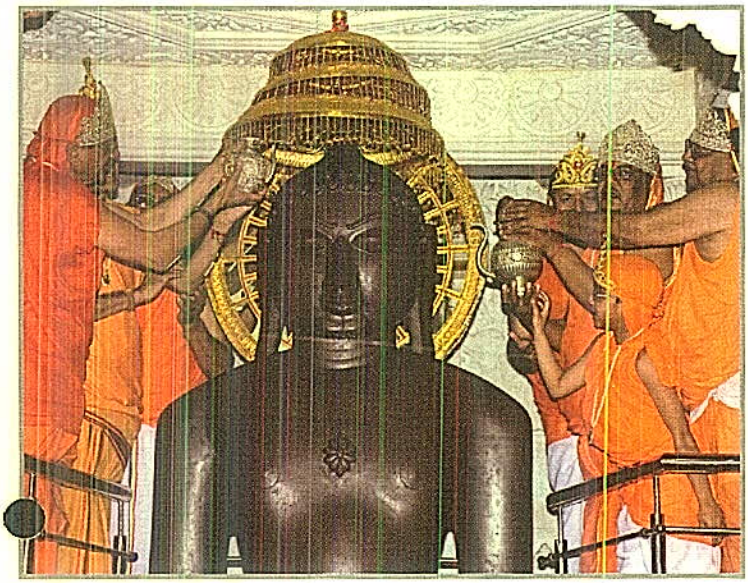

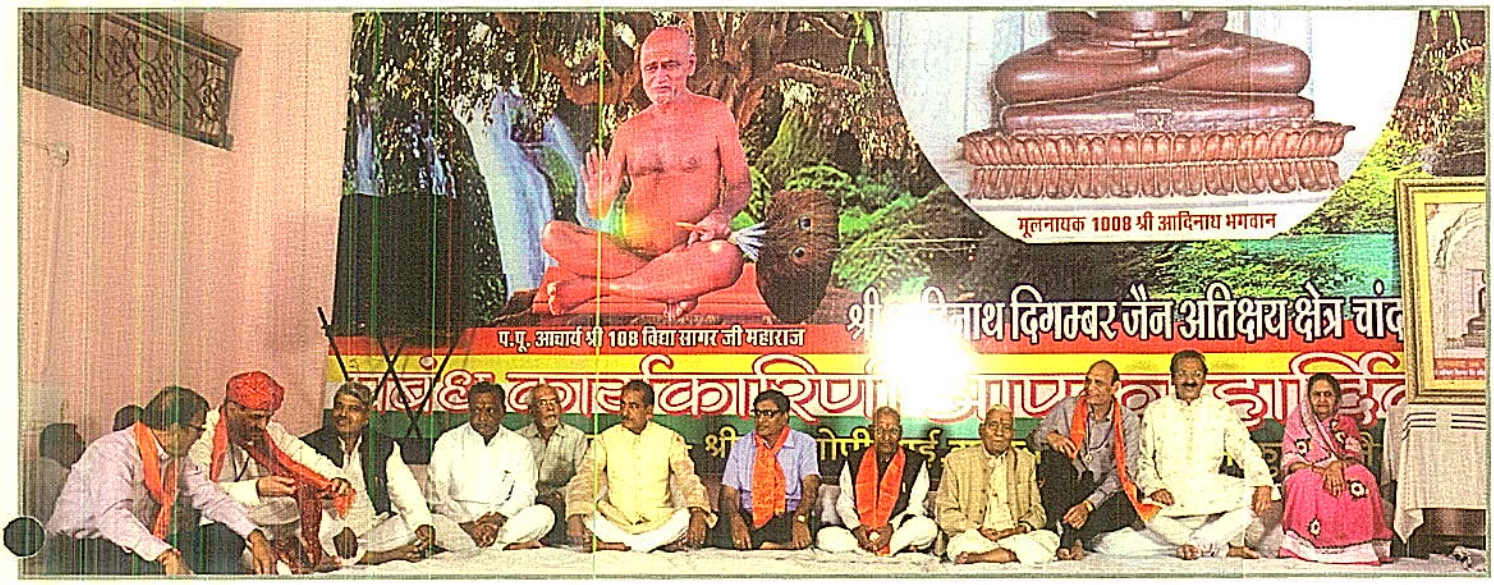

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है ।

## चांदखेड़ी, भगवान आदिनाथ का जन्मोत्सव दृश्य

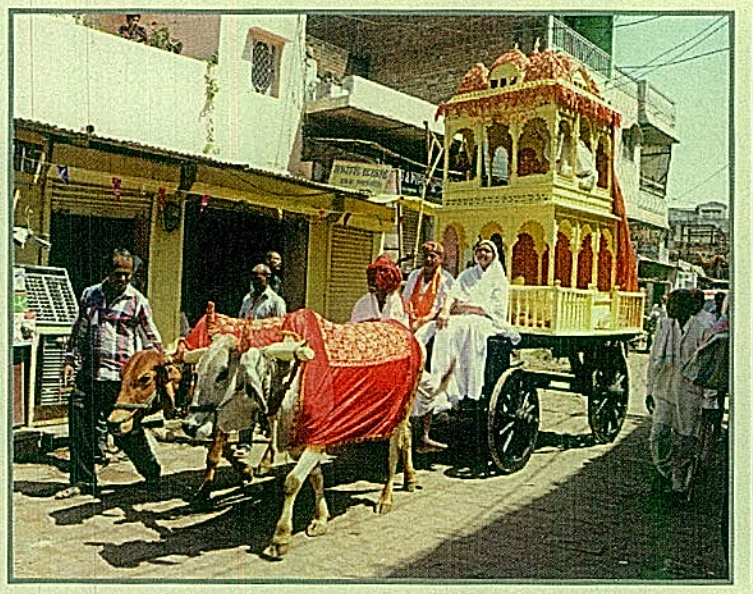

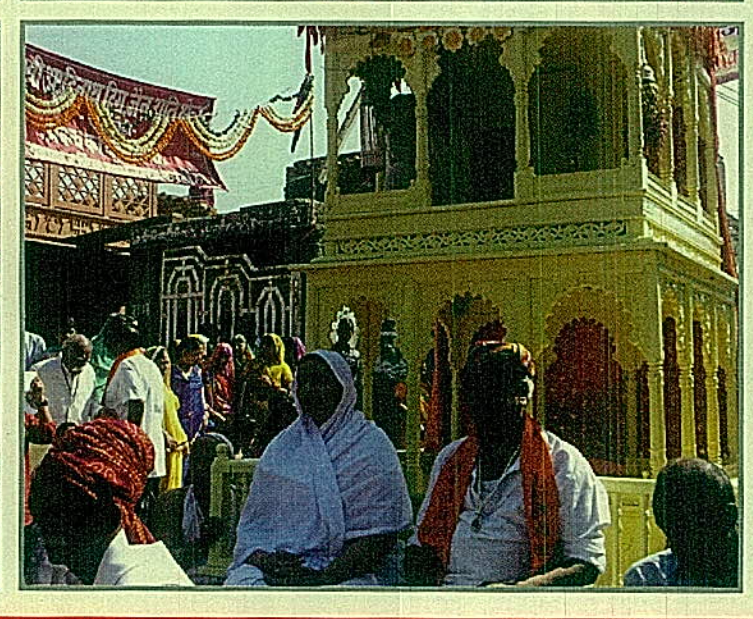



बुद्धिमान व्यक्ति सुनते सब की हैं लेकिन करते मन की है।

साधना की उपयुक्त स्थली ईशुरवारा

परमपूज्य सुधासागरजी महाराज की जन्म स्थली विंध्याचल की प्रशाखा पर भव्य मंदिर के दर्शन हेतु पहुँचे तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन। वहाँ विराजमान परमपूज्य मुनिश्री अजितसागरजी एवं ऐलक श्री विवेकानन्दजी के दर्शन एवं आशीर्वाद लेते हुए। स्थानीय पदाधिकारियों द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन।

कोटा छात्रावास संस्थान एवं दादावाड़ी के अध्यक्ष दानवीर श्री कैलाशचन्द जी सराफ, श्री राजमलजी अध्यक्ष-समस्त जैन समाज, कोटा

सागर जैन समाज के श्रेष्ठीगण, तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्माननीय एवं आजीवन सदस्यों द्वारा आत्मीय सम्मान। श्री आनंद जैन स्टील के प्रतिष्ठान में आहुति। तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यों की मीटिंग के सान्निध्य में।

इस अवसर पर सर्वश्री आनंद जैन स्टील, स्वदेश जैन (गुड्डू भैया), मुन्नालाल लंबरदार, मुकेश जी (ढाना), सुनील जैन (पाइप), अनिल जैन (नैनधरा), सुरेन्द्र जी, मालथौन; संतोष जैन 'घड़ी' एवं डॉ. संजय जैन।

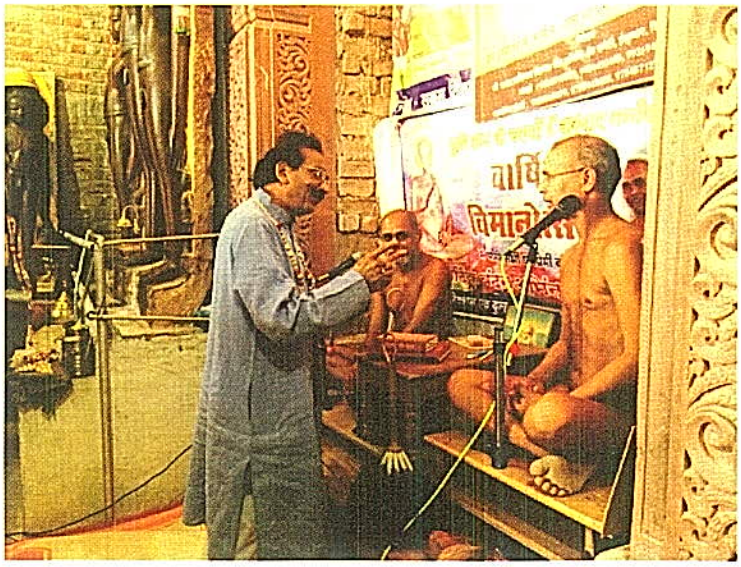

बिना पूछे न बोलें और पूछने पर असत्य न बोलें।

# अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद मध्य प्रदेश का त्रैवार्षिक प्रांतीय अधिवेशन सानंद सम्पन्न तीर्थक्षेत्र कमेटी को 65 हजार की राशि भेंट

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद मध्य प्रदेश का त्रैवार्षिक प्रांतीय अधिवेशन एवं अलंकार समारोह का आयोजन रविवार दिनांक ६ अप्रैल २०१४ को भाग्योदय तीर्थ स्थल सागर (मध्य प्रदेश) में किया गया, जिसमें मध्य प्रदेश की सभी बहिनों ने धार्मिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण,संस्कार, व्यक्तित्व विकास एवं बेटी बचाओ पर बहुत कार्य कर समाज को लाभान्वित एवं जागरुक किया और समाज में ऐतिहासिक छवि बनाकर महिला परिषद को बुलंदियों तक पहुंचाया।

इस अधिवेशन में महिला परिषद की करीब १२०० से अधिक महिलाएं अनेक शहरों, प्रांतों से सम्मिलित हुई थीं। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला गंगवाल, उपाध्यक्ष- डॉ. जीवनलाल जैन (सागर), श्री अनिल जैन (दिल्ली), डॉ. आशा विनायका (इंदौर) के नेतृत्व में अधिवेशन की सराहनीय व्यवस्थाओं एवं मंचन के लिए हार्दिक बधाई।

महिलाओं का ऐसा सप्तरंगी उत्साह भरा इन्द्रधनुषी अधिवेशन सचमुच समाज के लिए गौरव की बात है। इस अवसर पर डॉ. आशा विनायका की प्रेरणा से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रथम प्रयास के रूप में ६५ हजार रुपये का चेक प्रदान किया गया। इन भावों के साथ की आगामी राशि हजारों में नहीं लाखों में होगी। इसके लिए परिषद की सभी महिला सदस्यों को साधुवाद एवं जयजिनेन्द्र।

- सुधीर जैन, कटनी

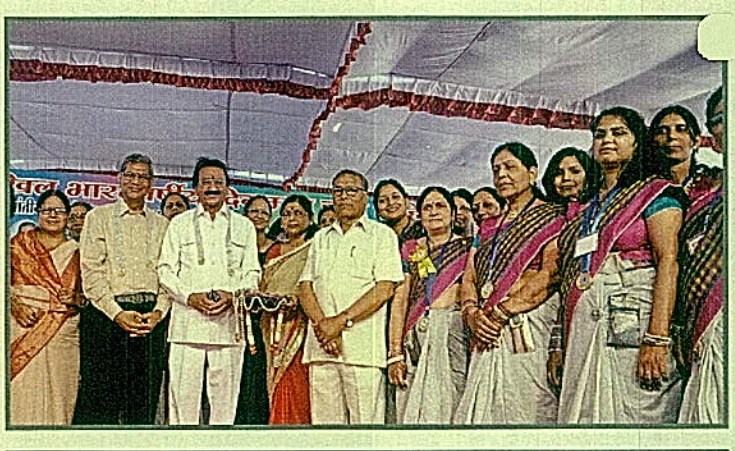

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है।

## प.पू. राष्ट्रसंत, श्रमण संस्कृति के राजहंस, संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए देश की प्रमुख नेता श्रीमती सुषमा स्वराज

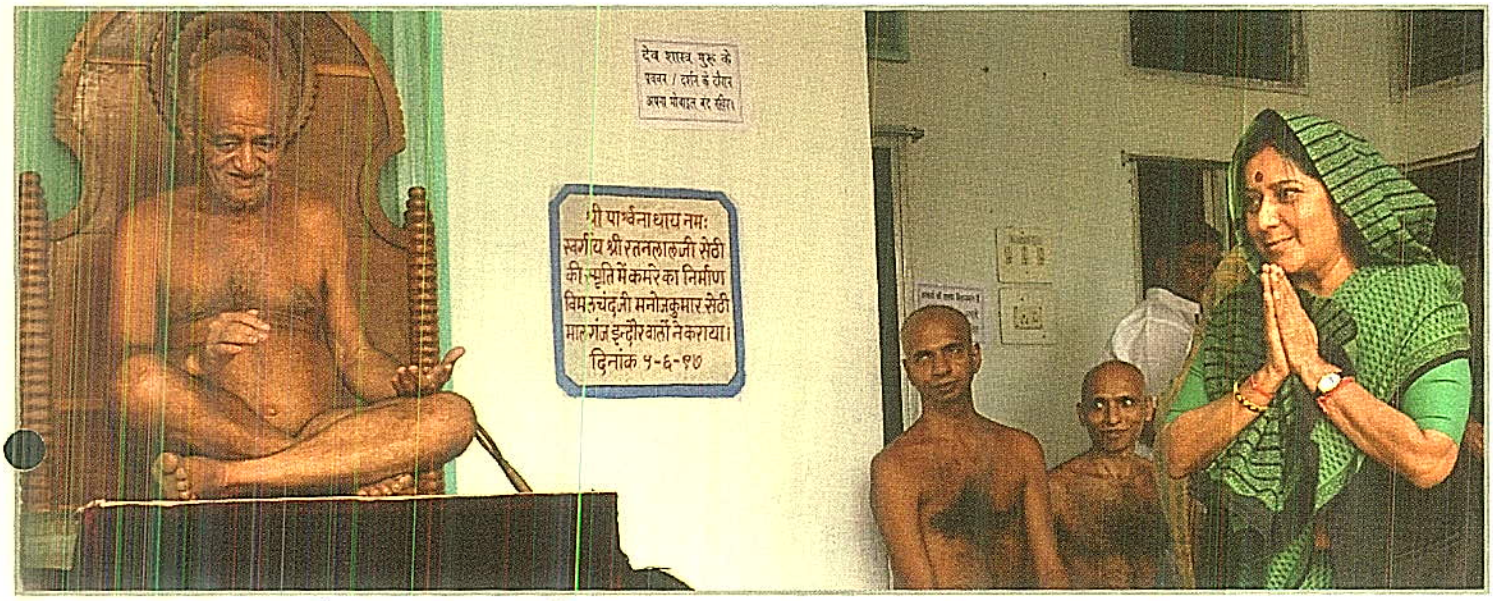


## नेमावर में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की भव्य अगवानी

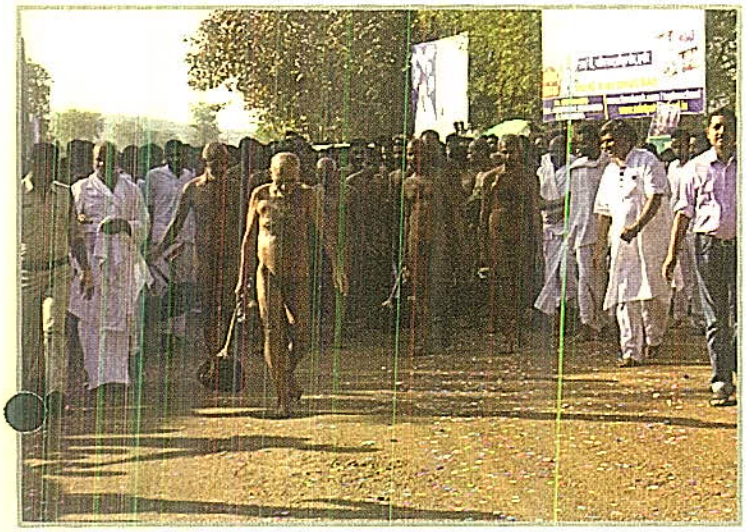

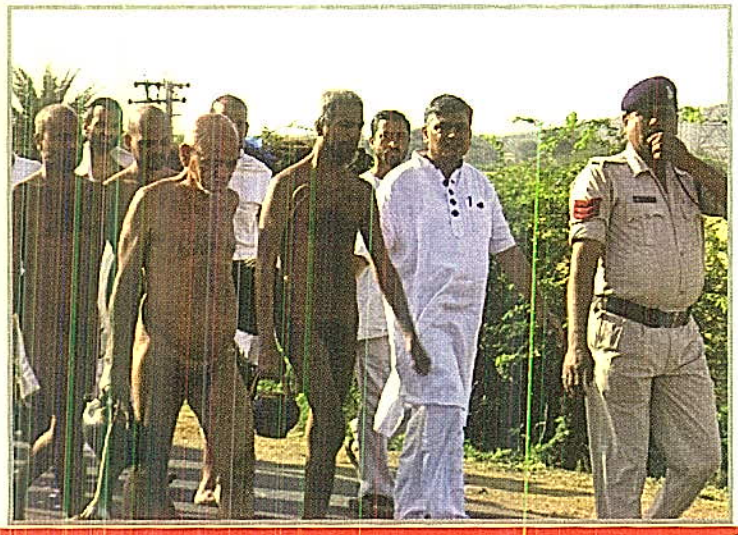

वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

# अतिशय क्षेत्र श्री भातकुली (अमरावती) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तीसरी वर्षगाँठ / विशाल कार्यालय, तीन सेवक निवास का लोकार्पण कार्य सम्पन्न / नवनिर्मित कीर्ति स्तम्भ का भूमिपूजन श्रीमती सरिता जैन, चेन्नई का नागपुर नगरी में भव्य स्वागत समारोह

श्री 1008 आदिनाथ स्वामी दिगम्बर जैन संस्थान अतिशय क्षेत्र श्री भातकुली (अमरावती) में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तीसरी वर्षगांठ का कार्यक्रम 2 मार्च, 2014 को प.पूज्य मुनिश्री 108 समतासागरजी महाराज, मुनिश्री 108 पुराणसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 अरहसागरजी महाराज, ऐलक श्री 105 निश्चयसागरजी महाराज इनके पावन सान्निध्य में और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्षा श्रीमती सरिताजी महेन्द्रकुमार जैन, चेन्नई; राष्ट्रीय मंत्री श्री संतोष जी जैन पेंढारी, नागपुर एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के मंत्री श्री अनिलजी जोहरापुरकर के विशेष आतिथ्य तथा विशाल जनसमूह के बीच सम्पन्न हुआ।

इस मंगल प्रसंग पर श्री भक्तामर विधान का आयोजन किया गया। प.पू.मुनिश्री 108 समतासागरजी महाराज के मंगल प्रवचन के पश्चात श्रीमती सरिताजी जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्षा, श्री संतोष जी जैन राष्ट्रीय मंत्री के कर-कमलों द्वारा यहाँ पर निर्मित विशाल कार्यालय, तीन सेवक निवास का लोकार्पण कार्य सम्पन्न हुआ। विशाल एवं सभी दृष्टि में परिपूर्ण कार्यालय देखकर श्रीमती सरिताजी जैन ने संस्थान के अध्यक्ष श्री सतीश संगई, मंत्री नाना चांदुरकर, कोषाध्यक्ष श्री बी.पी.वैद्य के प्रति आभार व्यक्त किये। इसी कड़ी में वाल्मिक चौक पर नवनिर्मित कीर्ति स्तम्भ का धार्मिक अनुष्ठान के साथ श्रीमती सरिताजी जैन एवं श्री संतोष जैन द्वारा भूमिपूजन का कार्य प.पूज्य मुनिश्री के मंगल सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस संपूर्ण कार्यक्रम में विभिन्न गांव से पधारे भक्तगणों के अलावा, सर्वश्री मनोहरराव डाखोरे, विजयकुमार गिल्लरकर, राजकुमार डोणगांवकर, राजकुमार बड़जात्या, वसंतराव बडनेरकर, राजकुमार वगात्रे, राजेन्द्रकुमार जैन, कु. उज्ज्वला रोकड़े आदि अनेक संस्था के पदाधिकारी उपस्थित थे। यहाँ पर चल रहे जीर्णोद्धार विकास के कार्य के प्रति विशेष रूप से श्री सतीश संगई अध्यक्ष के प्रति श्रीमती सरिता जैन, चेन्नई ने शुभकामना व्यक्त करते हुए आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम के पूर्व 2 मार्च, 2014 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि क्षेत्र की वंदना के लिये श्रीमती सरिताजी जैन, चेन्नई राष्ट्रीय उपाध्यक्षा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री संतोष जैन पेंढारी- राष्ट्रीय मंत्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं श्री अनिल जोहरापुरकर - मंत्री महाराष्ट्र अंचल का आगमन हुआ। वंदना एवं पूजन के पश्चात यहाँ के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अतुलजी कलमकर ने श्रीमती सरिताजी जैन का भव्य सम्मान किया। यहाँ पर चल रहे जीर्णोद्धार कार्य का अवलोकन करके श्रीमती सरिताजी जैन ने

संपूर्ण क्षेत्र के पदाधिकारी एवं श्री अतुलजी कलमकर का विशेष अभिनंदन किया एवं संतोष व्यक्त किया।

उपरोक्त कार्यक्रम हेतु श्रीमती सरिताजी जैन का नागपुर में दिनांक 1 मार्च, 2014 को आगमन हुआ। 'सन्मति भवन' लाडपुरा इतवारी, नागपुर में इनका भव्य स्वागत समारोह का विशेष आयोजन किया गया था। नागपुर नगरी के विभिन्न मंदिर संस्था, सामाजिक संस्था, धार्मिक संस्था आदि 20 के ऊपर संस्था द्वारा इनका भव्य स्वागत किया गया। श्रीमती सरिता जैन ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से सभी को सक्रिय सहयोग देने की प्रार्थना व्यक्त की। विशेष रूप से महिला वर्ग इस संवर्धन कार्य में जुड़े यह भाव व्यक्त किये।

श्रीमती सरिता एम.के.जैन ने नागपुर में स्थित श्री दिगम्बर जैन से मंदिर लाडपुरा, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मोठे मंदिर, इतवारी, श्री पाश्व. दिगम्बर जैन सैतवाल मंदिर शहीद चौक, श्री दिग.जैन मंदिर सदर में भेंट करके वहाँ पूजन-वंदन किया। इस प्रसंग पर सर्वश्री श्रीमती सतीश जैन (पेंढारी), दिलीपजी राखे, रविन्द्र कुमार आग्रेकर, हुकुमचन्द सेठी, निरंजन बोहरा, अशोक पळसापुरे, अभय पनवेलकर, राजेन्द्र धुमाळ, आनंदराव सवाने, भँवरलालजी जैन, रमेशभाई जैन, गृहस्थाचार्य श्री मनोहरजी आग्रेकर, श्रीषेणजी डोणगांवकर (भूतपूर्व न्यायाधीश) आदि अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

नागपुर से लगभग 50 कि.मी. की दूरी पर स्थित श्री अतिशय क्षेत्र रामटेक में जाकर भगवान शांतिनाथ स्वामी के दर्शन किये एवं प.पू.108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ की चरण वंदना की।

**- अनिल कुमार जोहरापुरकर, नागपुर**
**मंत्री - महाराष्ट्र अंचल**



धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

# संस्कृति के संवाहक बने शिक्षक - आचार्य ज्ञानसागर

## ज्ञानसागर गुरुकुल में राष्ट्रीय शिक्षक सम्मेलन सम्पन्न

बरनावा (उत्तर प्रदेश)। ज्ञानसागर गुरुकुल बरनावा (बागपत) उत्तर प्रदेश के 11वें वार्षिक महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय जैन शिक्षक सम्मेलन का आयोजन 22523 मार्च 2014 को सम्पन्न हुआ। अनेक प्रांतों के शिक्षक-शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने कहा कि वर्तमान की शिक्षा केवल रोजगार के लिए होती है लेकिन वह बेरोजगार ज्यादा बनाती है, जिस शिक्षा से जीवन का समुन्नत विकास हो सकता है वह केवल आजीविका व स्वप्न दिखाती है, शिक्षा का उद्देश्य अर्थोपार्जन तक सीमित हो गया है जिस कारण वर्तमान पीढ़ी संस्कृति से विमुख हो रही है। आवश्यकता है कि शिक्षक स्वयं चारित्रवान बने व भारतीय श्रमण संस्कृति के संवाहक भी बने और शिक्षकीय दायित्व का निर्वहन जिम्मेदारी के साथ करते हुए जैन समाज का नाम स्थापित करें।

आचार्यश्री ने तीन सत्रों में हुए अपने मार्गदर्शी व्याख्यान में वर्तमान शिक्षा पद्धति, संस्कारों का अभाव, नैतिक शिक्षा का विलोपीकरण, संस्कृति ज्ञान का अभाव, शिक्षकों का चारित्रिक अवमूल्यन, गैर जिम्मेदारी पूर्ण शिक्षण के बारे में गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जब परिस्थितियाँ विपरीत हो ऐसी स्थिति में शिक्षक का दायित्व बढ़ जाता है। जैन शिक्षक ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा का प्रमाण बने अनेक संस्मरण उदाहरणों के माध्यम से आचार्यश्री ने शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

'वर्तमान समाज एवं शिक्षा का संवर्धन तथा जैन धर्म का अवदान' विषय पर तीन सत्रों में शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. श्रेयांस जैन ने शिक्षक सम्मेलन के संदर्भ में विचार व्यक्त करते हुए शिक्षकों से अपना कार्य जिम्मेदारी से करने व उसमें रोचकता लाने हेतु कहा। डॉ. जयकुमार जैन ने कहा कि माता-पिता तो बच्चे को जन्म देते है लेकिन उसकी रक्षा व जीवन निर्माण का दायित्व शिक्षक ही निभाता है। डॉ. नीलम जैन ने कहा कि गुरु अपने शिष्य को हमेशा उच्च पद पर देखना चाहता है यह उसके त्याग व समर्पण के कारण ही संभव हो पाता है। डॉ. कपूरचन्द जैन ने कहा कि संपूर्ण भारत वर्ष में शिक्षा के लिए जैन समाज ने सर्वाधिक दान दिया है, देश के प्रत्येक ग्राम नगर में जहाँ जैन समाज है वहाँ जैन व्यक्ति ने शिक्षा के लिए दान अवश्य दिया है। प्रख्यात प्रशिक्षक श्री अशोक जैन दिल्ली ने कहा कि शिक्षक केवल वेतन भोगी न बने, शिक्षक में वह ताकत है जिससे संपूर्ण समाज बदल सकता है। श्री राजेन्द्र जैन महावीर ने कहा कि भाषा, भूषा, भोजन, भजन सभी पर विदेश संस्कृति का साया है ऐसी परिस्थिति में शिक्षक की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। मयंक शास्त्री ने शिक्षकों के नैतिक दायित्व व सहयोगियों को परेशानी पर विचार रखें। सर्वश्री मुन्नालाल जैन, विनोद शास्त्री, निर्मल शास्त्री, सुनील जैन प्रसन्न, मनीष शास्त्री, नवीन बाबू जैन, प्रदीप जैन आदि ने अपने चिंतन व जिम्मेदारी से अवगत कराते हुए आचार्यश्री की प्रेरणा व सम्मेलन की संयोजना पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आगामी समय में सम्मेलन आयोजित करने को कहा। संयोजक डॉ. सुनील संचय द्वारा विगत माह में डॉक्टरेट प्राप्त करने व सम्मेलन की सुंदर संयोजना के लिए सम्मानित किया गया।

ब्र. अतुल भैया ने समस्त शिक्षकों से आगामी समय में शैक्षिक कार्यों में सहयोग करने एवं गुरुकुल में विद्यार्थी भेजने हेतु निवेदन किया। उल्लेखनीय है कि विगत ग्यारह वर्षों से संचालित ज्ञानसागर गुरुकुल बरनावा में समाज के बच्चों को धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक अंग्रेजी माध्यम की सुविधा निःशुल्क रूप से सर्वसाधनों के साथ उपलब्ध कराई जावेगी। वर्तमान में 40 प्रतिभाशाली बच्चे अध्ययनरत है। वार्षिक महोत्सव में गुरुकुल के बच्चों द्वारा सुंदर प्रस्तुतियां दी गई। तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद के कुलाधिपति श्री सुरेशचन्द जैन ने गुरुकुल के बच्चों हेतु सुविधाओं की घोषणाएं की।



पाप से अर्जित धन पापों में खर्च होता है, अन्याय से अर्जित धन, अन्याय के कार्यों में खर्च होता है।

## श्रमणी आर्यिका विभालश्री माताजी का समाधिमरण

यूँ तो इस संसार में प्रतिदिन लाखों लोग आते-जाते हैं। लेकिन उन्हीं का जन्म सार्थक है जो इसे ज्ञान, ध्यान, तप, शील, स्व-परोपकार, दया, करुणा, सेवा इत्यादित गुणों से संवार लेते हैं। भगवान महावीर स्वामी की इस पुनीत दिव्य देशना को पूर्णतः जीवन में सार्थ करने वाले हैं तो एक मात्र उनके पथानुगामी दिगम्बर श्रमण संत हैं, जो जीवन पर्यन्त अनेक कष्टों को आत्मबल से मुस्कराते हुए सहन करते हैं और अंत में उन्हीं साधना के संस्कारों से मरण को सार्थक करने मृत्यु महा-महोत्सव मनाते हैं।

ऐसे ही साधकों को श्रृंखला में परमपूज्य युग प्रमुख श्रमणाचार्य राष्ट्र संत गणाचार्यश्री 108 विराग सागरजी महाराज की 86 वर्षीया शिष्या गत 8 वर्षों से संल्लेखना समाधि की साधना में तल्लीन साधिका श्रमणी आर्यिका विभालश्री माताजी ने 5 मार्च, 2014 की सुबह 4.45 बजे पर म.प्र. के विश्व प्रसिद्ध खजुराहो अतिशय क्षेत्र पर परमपूज्य गुरुवर एवं 42 साधुओं के मध्य गुरु मुख से 'ओम नमः सिद्धेभ्यः' एवं 'णमोकार मंत्र' का उच्चारण सुनते हुए अपनी नश्वर देह का त्याग कर दिया।

श्रमणी आर्यिका विभाल श्री माताजी गृहस्थावस्था में ललितपुर निवासी श्रीमती कस्तूरी जैन के नाम से जानी जाती थीं। इनके 1 पुत्र एवं 4 पुत्रियां हैं। लगभग 11 वर्ष पूर्व पूज्य गुरुवर से क्षुल्लिका दीक्षा, सन् 2006 में मेल चित्तामूर में सल्लेखना व्रत धारण किया।2011 में चंवलेश्वर (राजस्थान) पंचकल्याणक में आर्यिका दीक्षा प्रदान की गई। उन्होंने तप-त्याग-साधना को बढ़ाते हुये समाधिमरण की पुनीत भावना भायी थी। उन्होंने णमोकार पेंतीसी, सहस्त्रनाम, चारित्र शुद्धि आदि व्रतों के लगभग 2206 उपवास, 554 नीरस आहार, नमक का आजीवन त्याग, नित्य रसी, 2 अन्न, 5 हरी, अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्वों में उपवास तथा तत्वार्थसूत्र, भक्तामर, स्तोत्र, सहस्त्रनाम स्त्रोत इत्यादि पाठ करने का नियम था।

## अद्भुत नेतृत्व के धनी श्री नानगरामजी जौहरी का महाप्रयाण (4 मार्च, 2014)

जयपुर। भद्रपरिणामी, मुनिभक्त श्री नानगराम जी जौहरी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने पूरे देश में धर्म और समाज के क्षेत्र में जो कार्य किए हैं वह अतुलनीय है। श्री नानगरामजी के मन में जैन धर्म के प्रति अगाध निष्ठा और समाज के उन्नयन की उत्कट भावना थी, उनके द्वारा किए गए कार्यों की आशातीत सफलता में उनकी संगठन क्षमता का विशेष महत्व रहा है, उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वे मानव मनोविज्ञान के कुशलवेत्ता थे, वे जानते थे कि किससे कब, क्या काम लेना है। उनकी उदार भावना और दूरदर्शिता अद्भुत थी। आप परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के परम भक्तों में थे। आपने एक आदर्श संघपति के उत्तरदायित्व का निर्वाह भी किया है।

आपने अनेक रत्न प्रतिमाओं को निर्मित कराकर परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज से दिल्ली में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराकर जयपुर में चूलगिरि पर रत्न प्रतिमाओं को वेदी पर विराजमान किया। आप अपने विवेक के साथ लम्बे समय तक राष्ट्रहित, धर्महित और समाजहित के कार्य करते रहे। ऐसी भव्यात्मा को सुगतिगमन, बोधिलाभ व श्रद्धासुमन समर्पित हैं।

## उद्योगपति दानवीर सेठ श्री नगीनदास जुमाभाई गांधी का दुःखद निधन

ईडर के उद्योगपति दानवीर सेठश्री गांधी नगीनदास जुमाभाई का 95 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप परम मुनि भक्त थे। आपश्री ने कई बार शिखरजी एवं गिरनारजी की यात्रा का संघ निकाला था। आप आचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराज दक्षिण वाले के परम भक्त थे। आपने ईडर के प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए भी सहयोग दिया है।

## वात्सल्य की मूर्ति माँ अमरोबाई जैन का निधन

दिगम्बर जैन महासमिति के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन शिक्षा समृद्धि के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विजय जैन की पूज्य माँ श्री एवं कीर्तिशेष समाजरत्न प्रकाशचन्द्र जैन लुहाड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती अमरोबाई जैन का 89 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। उनकी रस्म उठावनी के अवसर पर के.एल.जैन इण्टर कालेज सासनी में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में देशभर से आये गणमान्य लोगों ने पूज्य मां अमरोबाई के वात्सल्य, दानशीलता व समाजसेवी गुणों की प्रशंसा करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये।

झांसी में शोक सभा में केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य, राज्य श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्र जैन सिंघई, श्री ऋषभ जैन आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

**भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं जैन तीर्थ वंदना महापरिवार उक्त महानुभावों के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करता है और दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।**



सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

## आजीवन सदस्य

Shri Virashaba Doss Maruthappan
Uppuvellore

Shri Vasudevan Boopalan Jain
Kilkovalavedu

Shri Danyakumar Dhanpal
Vandavasi

Shri Satishkumar Appavu Jain
Vandavasi

Shri K. P. Jambukumaran Pushpanathan
Vandavasi

Shri Rajkumar Krishnasamy Jain
Vandavasi

Shri Santhakumar Dhanakeerthi Jain,
Katpadi

Shri Jeevagan Dhanyakumar Jain,
Vandavasi

Shri Prakash Pathmaraj Jain,
Uppuvellore

Shri Ashok Padmaraj Jain
Uppuvellore

Shri Chandrabose Rajannan Jain
Uppuvellore

Shri Bavanandhi Chinnaraj Jain
Vandavasi

Shri Rajsekaran Chakarvarthi Jain
Somasipadi

Shri Vijay Kumar Appandanathan Jain
Vengikkal

Shri Uday Kumar Arugadoss Jain
Tiruvannamalai

Shri Udhay Kumar Chakkaravarthi Jain
Tiruvannamalai

Shri Ashok Kumar Boopalan Jain
Tirumalai

Shri Suresh Kumar Udhayanan Jain
Thirumalai

Shri Pushparaj Santhiraj Jain
Thayanoor

Shri Suresh Selvaraj Jain
Tiruvannamalai

Shri Sakumar Padmaraj Jain
Tiruvannamalai

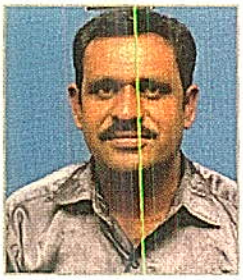
Shri Duraisamy Parshwanathan Jain
Gingee

Shri Jayaprakash Bahubali Jain
Uppuvellore

Shri Prabhakaran Jayakumar Jain
Uppuvellore

Shri Duraisamy Kirajannan Jain
Uppuvellore



प्रत्येक जैन को अपने नाम के साथ 'जैन' अवश्य लिखना चाहिये

।। श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः ।।

।। आचार्यश्री शान्तिवीरशिवधर्माजितवर्धमानसागरेभ्यो नमः ।।

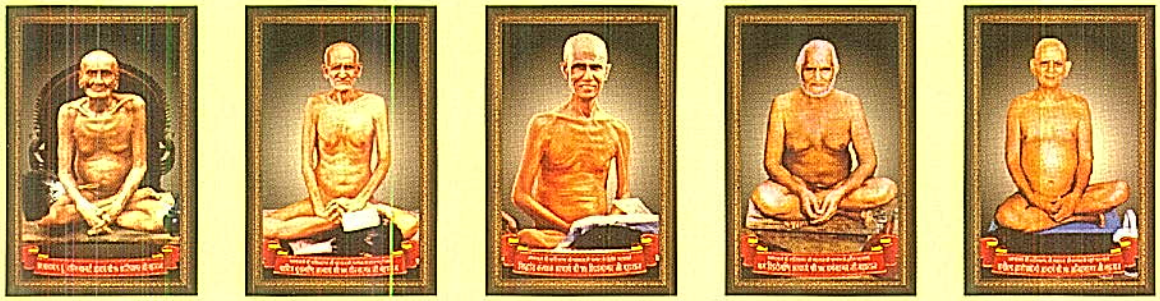

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्यश्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज का

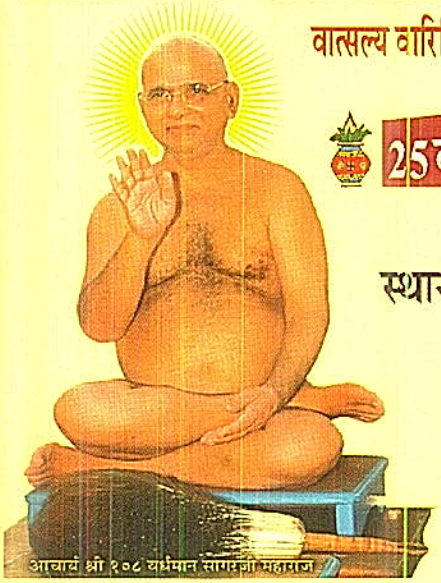


# 25वाँ आचार्य पदारोहण रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव

## दिनांक 25 जून से 29 जून 2014

## स्थान : मदनगंज-किशनगढ़ (जिला-अजमेर) राजस्थान

**महोत्सव के सुरभित पुष्प**

- 25 जून — उदय उत्सव
- 26 जून — श्रुत उत्सव
- 27 जून — सद्भावना उत्सव
- 28 जून — अर्चना उत्सव
- 29 जून — अभिनन्दन उत्सव

हमारे असीम पुण्योदय से वर्तमान शासन नायक तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी द्वारा उपदिष्ट तथा गौतमादि गणधर प्रभृति कुन्दकुन्दाचार्य पर्यन्त अनुपालित निर्ग्रन्थ श्रमण परम्परा के बीसवीं सदी में निर्मल प्रवाहक एवं पुनरुद्धारक, प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती, अध्यात्म योगी, परम तपस्वी महामुनि, परम पूज्य आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की अक्षुण्ण बाल ब्रह्मचारी पट्ट-परम्परा के सफल सारथी वर्तमान पट्टाधीश, वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के 25वें आचार्य पदारोहण दिवस के पावन अवसर पर विनय-श्रद्धा-भक्ति के सुरभित सुमन समर्पण के रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव को मनाने का मंगलमय प्रसंग प्राप्त हुआ है।

आपसे सादर निवेदन है कि महामहोत्सव के इन पुनीत क्षणों में सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित हमारे नगर मदनगंज-किशनगढ़ में अवश्य पधारें।

निवेदक :
श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत
मदनगंज-किशगढ़

विनीत :
सकल दिगम्बर जैन समाज
मदनगंज-किशनगढ़

**आयोजक : वात्सल्य वारिधि जिनधर्म प्रभावक आचार्यश्री वर्धमानसागर आचार्य पदारोहण रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव समिति**

सम्पर्क सूत्र : 094141 74888, 098290 71442, 098299 42177
093397 56995, 094141 35314, 096940 11588

E-mail :
mahotsavrajatjayanti@gmail.com